घटती घटना

सत्य के साथ...जनहित में बात...

अम्बिकापुर,वर्ष 22, अंक - 08- शनिवार 08- नवम्बर 2025,पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये ,www.ghatati-ghatana.com,RNI Reg.No.- CHHHIN/2004/15050,डाक पंजीयन. क्रं. 13/Surguja DN/ 2023-2025

स्कूल व कॉलेज अस्पताल से आवारा कुत्ते हटाएं,नसबंदी करके शेल्टर होम में रखें जहां से पकड़ें वहीं न छोड़ें : सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली,07 नवम्बर 2025। सुप्रीम कोर्ट ने आवारा कुत्तों को स्कूल, कॉलेज,अस्पताल और बस स्टैंड से दूर रखने के आदेश दिए हैं। कोर्ट ने शुक्रवार को कहा कि स्कूल-कॉलेज और अस्पतालों में बाड़ लगाई जाए,ताकि आवारा कुत्ते वहां न पहुंच सकें। कोर्ट ने कहा कि पकड़े गए आवारा कुत्तों को उसी जगह पर वापस नहीं छोड़ा जाएगा, जहां से उन्हें उठाया गया था। उन्हें शेल्टर होम में रखा जाएगा। कोर्ट ने सभी नेशनल और स्टेट हाईवे से आवारा पशु हटाने का आदेश भी दिया। सर्वोच्च अदालत ने सभी राज्यों के मुख्य सचिव इन आदेशों का सख्ती से पालन कराने को कहा है। इस मामले में 3 हफ्ते में स्टेटस रिपोर्ट और हलफनामा मांगने को कहा है। अगली सुनवाई 13 जनवरी को होगी। राजस्थान हाईकोर्ट ने 3 महीने पहले सरकारी एजेंसियों को सड़कों से आवारा जानवरों को हटाने का आदेश दिया था। कार्रवाई को प्रभावित करने वालों के खिलाफ एफआईआर के आदेश भी दिए थे। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को कहा कि राजस्थान हाईकोर्ट का फैसला पूरे देश में लागू होगा।

युद्धाभ्यास 'त्रिशूल' में भारत ने पश्चिमी सरहद पर हवा से जमीन तक दिखाई ताकत

जोधपुर,07 नवम्बर 2025। रेगिस्तान की तपती रेत पर शुक्रवार को भारतीय सेना की शक्ति गरज उठी। जैसलमेर में फैले विशाल मरुस्थल में सेना ने अपने संयुक्त हथियार अभियान का शानदार प्रदर्शन किया। आसमान में उड़ते हेलीकॉप्टर और जमीन पर दौड़ते टैंक एक साथ दिखे -जैसे कोई जंग अभी शुरू होने वाली हो। दरअसल, भारत की तीनों सेनाएं इन दिनों पश्चिमी सीमा पर ऑपरेशन सिंदूर के बाद सबसे बड़ा युद्धाभ्यास कर रही है, जिसका नाम युद्धाभ्यास त्रिशूल दिया गया है। करीब तीस हजार सैनिक इस अभ्यास में अपना दमखम दिखाकर दुनिया को सन्देश दे रहे हैं कि हम किसी से कम नहीं। युद्धाभ्यास में कमांड पोस्ट से हर यूनिट पर नजर रखी जा रही है। ड्रोन और सैटेलाइट से आई रीयल-टाइम तस्वीरें स्क्रीन पर हैं। यह सिर्फ अभ्यास नहीं, बल्कि तकनीकी तैयारी का इम्तिहान है, जहां एक गलती की गुंजाइश नहीं। सेना का कहना है कि यह अभ्यास भविष्य के युद्ध के लिए बेहद अहम है, क्योंकि आने वाले समय में युद्ध सिर्फ बंदूकों से नहीं, बल्कि नेटवर्क, सेंसर और सटीक समन्वय से लड़े जाएंगे। इस मिशन में सेना के भरोसेमंद हेलीकॉप्टर ध्रुव, रुद्र, चेतक और चीता अहम भूमिका निभा रहे है। विमानन विंग और मैकेनाइज्ड यूनिट्स ने अभूतपूर्व समन्वय का प्रदर्शन:अभ्यास के दौरान सेना के विमानन विंग और मैकेनाइज्ड यूनिट्स ने अभूतपूर्व समन्वय का प्रदर्शन किया। हवाई निगरानी, रीकॉन ओवरवॉच और विशेष हैलीबोर्न मिशन को सफलता से अंजाम दिया गया।

उत्तर कोरिया ने अमेरिकी प्रतिबंधों के बाद लॉन्च की बैलिस्टिक मिसाइल

सोल,07 नवम्बर 2025। उत्तर कोरिया लगातार बैलिस्टिक मिसाइलों का परीक्षण कर रहा है। अब उत्तर कोरिया ने शुक्रवार को पूर्वी सागर की ओर कम दूरी वाली बैलिस्टिक मिसाइल लॉन्च की है। बता दें, इससे ठीक एक दिन पहले उत्तर कोरिया ने अमेरिका की ओर से लगाए गए प्रतिबंधों को लेकर चेतावनी भी दी थी। दरअसल,अमेरिका ने दो नॉर्थ कोरियाई कंपनियों और आठ लोगों पर प्रतिबंध लगाने का ऐलान किया। अमेरिका का आरोप है कि इन कंपनियों और व्यक्तियों ने अवैध साइबर गतिविधियों के जरिए पैसों की धोखाधड़ी करके उसे वैध बनाने का काम किया। अमेरिका के ज्वाइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ (जेसीएस) ने कहा कि यह मिसाइल उत्तरी फ्योंगान के ताएगवान काउंटी के पास से दोपहर 12:35 बजे लॉन्च की गई थी।

वंदे मातरम् सिर्फ शब्द नहीं,भारत की आत्मा और संकल्प का स्वर है : प्रधानमंत्री मोदी

नई दिल्ली,07 नवम्बर 2025। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को कहा कि वंदे मातरम् केवल एक शब्द नहीं बल्कि यह एक मंत्र,एक ऊर्जा,एक सपना और एक संकल्प है। यह गीत मां भारती के प्रति भक्ति और समर्पण की प्रतीक भावना है जो हमें अपने अतीत से जोड़ता है, वर्तमान में आत्मविश्वास भरता है और भविष्य के लिए साहस देता है। प्रधानमंत्री मोदी ने आज नई दिल्ली में राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने के अवसर पर वर्षभर चलने वाले समारोह का शुभारंभ किया। उन्होंने वंदे मातरम् पर विशेष स्मारक सिक्का और डाक टिकट भी जारी किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि वंदे मातरम् का मूल भाव है भारत मां भारती भारत की शाश्वत संकल्पना। जब यह चेतना शब्दों और लय के रूप में प्रकट हुई तब वंदे मातरम् जैसी रचना सामने आई। गुलामी के दौर में यही उद्घोष भारत की स्वतंत्रता का संकल्प बन गया था। वंदे मातरम् स्वतंत्रता संग्राम का स्वर बन गया जो हर क्रांतिकारी की जबान पर और हर भारतीय की भावना में रचा-बसा था।

प्रधानमंत्री ने वंदे मातरम् के 150 वर्षों की ऐतिहासिक यात्रा को भी याद करते हुए कहा कि बंकिमचंद्र चटर्जी ने जब 1875 में इसे बंगदर्शन में प्रकाशित किया तब किसी ने नहीं सोचा था कि यह गीत स्वतंत्रता आंदोलन की आत्मा बन जाएगा। 1896 में रवींद्रनाथ टैगोर ने कांग्रेस अधिवेशन में इसे गाया जबकि 1905 में बंग भंग आंदोलन के दौरान यह विरोध का प्रमुख नारा बना। वंदे मातरम् ने न केवल अंग्रेजी शासन के खिलाफ जनता को एक किया बल्कि एक समृद्ध सुजलाम सुफलाम भारत का सपना भी जगाया। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह गीत स्वतंत्रता सेनानियों के लिए प्रेरणा था और आज भी यह आजादी की रक्षा के संकल्प का प्रतीक है। बंकिम बाबू ने मां भारती को ज्ञान की देवी सरस्वती समृद्धि की देवी लक्ष्मी और शक्ति की देवी दुर्गा के रूप में चित्रित किया। यही भाव आज भारत को विज्ञान तकनीक रक्षा और आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में अग्रणी बना रहा है। जब भारत ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर कदम रखा, जब हमारी बेटियां फाइटर जेट उड़ाने लगीं या विज्ञान से लेकर खेल तक नई ऊंचाइयां छूने लगीं तो हर भारतीय के दिल से एक ही स्वर निकला भारत माता की जय, वंदे मातरम्। प्रधानमंत्री ने कहा कि वंदे मातरम् केवल स्वतंत्रता का गीत नहीं बल्कि भारत की आत्मा की अभिव्यक्ति है। उन्होंने इस अवसर पर सभी ज्ञात-अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों को नमन किया जिन्होंने वंदे मातरम् का उद्घोष करते हुए अपना जीवन न्यौछावर किया। समारोह में केंद्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, दिल्ली के उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना और मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने पर 7 नवम्बर 2025 से 7 नवम्बर 2026 चलने वाले कार्यक्रमों की शुरुआत है। इसके तहत देशभर में सार्वजनिक स्थलों पर वंदे मातरम् के सामूहिक गायन के साथ जन भागीदारी के अनेक आयोजन किए जायेंगे।

वंदे मातरम् की राष्ट्रगीत बनने की कहानी...

7 नवंबर 1875 को बंकिम चन्द्र चटर्जी ने वंदे मातरम् को पहली बार साहित्यिक पत्रिका बंगदर्शन में प्रकाशित किया। 1896 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में रवींद्रनाथ टैगोर ने मंच पर वंदे मातरम् गाया। यह पहला मौका था जब यह गीत सार्वजनिक रूप से राष्ट्रीय स्तर पर गाया गया। सभा में मौजूद हजारों लोगों की आंखें नम थीं।

वंदे मातरम् गाने पर बच्चों पर 5 रुपए का जुर्माना लगा...

1905 में बंगाल विभाजन के विरोध में वंदे मातरम् जनता की आवाज बन गया। रंगपुर के एक स्कूल में जब बच्चों ने यह गीत गाया, तो ब्रिटिश प्रशासन ने 200 छात्रों पर 5-5 रुपए का जुर्माना लगाया। सिर्फ इसलिए कि उन्होंने वंदे मातरम् कहा था। ब्रिटिश सरकार ने कई स्कूलों में वंदे मातरम् गाने पर प्रतिबंध लगा दिया था। उस समय छात्रों ने कक्षाएं छोड़ दीं, जुलूस निकाले और यह गीत गाना नहीं छोड़ा। कई जगह पुलिस ने उन्हें मारा, जेल में डाला गया। 17 अगस्त 1909 को जब मदनलाल ढींगरा को इंग्लैंड में फांसी दी गई।

बिहार में महागठबंधन की सरकार बनी तो शिक्षा स्वास्थ्य और रोजगार पर विशेष जोर दिया जाएगा : राहुल

भागलपुर,07 नवम्बर 2025। बिहार विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण के मतदान से पहले चुनाव प्रचार चरम पर है। तमाम दलों के नेता रैलियों और जनसभाओं के जरिए मतदाताओं को लुभाने में जुटे हैं। इसी कड़ी में कांग्रेस सांसद और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने शुक्रवार को भागलपुर के सैंडिस कंपाउंड में आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए लोगों से महागठबंधन उम्मीदवारों के लिए समर्थन मांगा। भागलपुर की जनसभा को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने कहा कि बिहार में महागठबंधन की सरकार बनने के बाद शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार पर विशेष बल दिया जाएगा। यह सरकार गरीब, पिछड़े, अति पिछड़े, किसान,मजदूर और युवाओं की होगी। राहुल गांधी ने कहा कि बिहार के नालांदा

विश्वविद्यालय का प्राचीन गौरव लौटाया जाएगा। इसे विकसित किया जाएगा। यहां पूर्व की तरह विदेशों से लोग शिक्षा ग्रहण करने आएंगे। राहुल गांधी ने कहा कि बिहार के बुनकरों और मखाना किसान के लिए बाजार और अन्य सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाएंगी, ताकि उनको उनके उत्पाद का उचित कीमत मिल सके। राहुल गांधी ने यहां एक बार फिर से वोट चोरी का मुद्दा उठाया और कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) वोट चोरी का प्लान पूरे देश में लागू करना चाहती है। इन्होंने हरियाणा, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र में यही काम किया है।

अब ये यही काम बिहार में करने की कोशिश कर रहे हैं। भाजपा पर हमला करते हुए राहुल गांधी ने दावा किया कि उनके कई नेताओं ने गुरुवार को बिहार में वोट दिया, उन्हीं नेताओं ने दिल्ली चुनाव में भी वोट दिया था। एक तरफ भाजपा नेताओं को एक से ज्यादा वोट देने दिया जा रहा है, वहीं, दूसरी तरफ उनके वोट काटे जाते हैं, जो कांग्रेस या महागठबंधन को वोट देते हैं। राहुल गांधी ने कहा कि बिहार में भी फर्जी वोटर लिस्ट आएगी और भाजपा के लोग फर्जी वोट डालने की कोशिश करेंगे, लेकिन बिहार की जनता ऐसा नहीं होने देगी,वो पोलिंग बूथ पर खड़ी होकर वोट चोरी रोकेगी। राहुल गांधी ने कहा कि हमारे संविधान में हिंदुस्तान की जनता की आवाज है, लेकिन भाजपा के लोग अमीरों की मदद करने के लिए, जनता का धन लूटने के लिए और संविधान को कुचलने के लिए वोट चोरी करते हैं। भागलपुर की जनता से उन्होंने कहा, मैं बस यही कहना चाहता हूं, भाजपा और चुनाव आयोग के लोग बिहार की जनता के बारे में नहीं जानते हैं।

हमें जंगलराज नहीं, सुशासन और समृद्धि के रास्ते पर आगे बढ़ना है : योगी

पूर्वी चम्पारण,07 नवम्बर 2025। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को बिहार के रक्सौल में आयोजित चुनावी सभा के मंच से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के उम्मीदवार प्रमोद कुमार सिन्हा और नरकटियागंज से जनता दल यूनाइटेड (जदयू) प्रत्याशी विशाल कुमार को जिताने की अपील की। रक्सौल में आयोजित सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि जो लोग लालटेन का केरोसिन बेचकर बिहार को अंधेरे में झोंकते थे, वही अब फिर आए हैं आपका राशन हजम करने के लिए। बिहार को अब जंगलराज नहीं, बल्कि सुशासन और समृद्धि की राह पर बढ़ाना है और यह काम केवल राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की डबल इंजन वाली सरकार ही कर सकती है। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि यह चुनाव सुशासन बनाम जंगलराज का है। बिहार को 1990 से 2005 के बीच जातीय संघर्ष,नरसंहार,अपहरण और डकैती के दौर में झोंकने वाले अब फिर नई पैकिंग में वोट मांगने निकले हैं। याद करिए ना, यह वही लोग हैं, जिन्होंने लालटेन की धुंधली लाइट में बिहार में जातीय संघर्ष करवाया था। यह वही लोग हैं, जो लालटेन की केरोसिन को बेच करके अंधेरा करते थे,फिर घरों में डकैती भी डालते थे। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि राजग सरकार में बिहार ने विकास की नई उड़ान भरी है। आज यहां सड़क, रेल, एयर कनेक्टिविटी, मेट्रो, इंजीनियरिंग कॉलेज, मेडिकल संस्थान और एम्स तक हैं। सुशासन और सुरक्षा की नींव पर ही निवेश आता है और निवेश से ही रोजगार पैदा होते हैं।

मोदी-नीतीश की सरकार ने बिहार से नक्सलवाद को समाप्त कर विकास के रास्ते पर लाने का किया काम : अमित शाह

पटना,07 नवम्बर 2025। बिहार विधानसभा चुनाव में पहले चरण के मतदान के बाद सियासी दिग्गजों ने दूसरे चरण में अपनी ताकत झोंक दी है। इसी कड़ी में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को जमुई में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) उम्मीदवार के पक्ष में एक जनसभा को संबोधित किया और लोगों से समर्थन मांगा। जनसभा को संबोधित करते हुए अमित शाह ने कहा कि कभी लाल गलियारे का गढ़ माने जाने वाला जमुई आज विकास की नई इबारत लिख रहा है। यह वही जमुई है, जो लाल आतंक के साये में था। यहीं वह जमीन थी, जहां नक्सलवादियों ने अपना ठिकाना बना लिया था, मगर आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और नीतीश

कुमार की डबल इंजन सरकार ने बिहार से नक्सलवाद को पूरी तरह समाप्त कर विकास के मार्ग पर लाने का काम किया है। अमित शाह ने कहा कि पहले बिहार के कई जिलों में भय का माहौल इतना था कि दोपहर तीन बजे तक ही मतदान कराया जाता था। अब शाम पांच बजे तक मतदान चलता है, क्योंकि डर का वातावरण खत्म हो गया है। उन्होंने लालू-राबड़ी शासन पर हमला करते हुए कहा कि उन दिनों बारात जाती थी, तो उगाही के लिए लोग कट्टा लेकर पहुंच जाते थे। अपहरण,फिरौती और नरसंहार आम बात थी। यही था उस दौर का बिहार। उसी जंगलराज ने राज्य की फैक्ट्रियां और कारोबार बंद करा दिए और बिहार को गरीबी की ओर धकेल दिया। अमित शाह ने कहा कि बिहार सुशासन से विकास के मार्ग पर आगे बढ़ रहा है। बिहार की जनता ने चुनाव के पहले चरण में ही डंके की चोट पर ये ऐलान कर दिया है कि जंगलराज भेष बदलकर,कपड़े बदलकर और चेहरा बदलकर आना चाहता है।

ईवीएम में दिखाई देगा बिहार के मतदाओं का गुस्सा : कांग्रेस प्रवक्ता पवन खेड़ा

नई दिल्ली,07 नवम्बर 2025। बिहार विधानसभा चुनाव में पहले चरण के मतदान के बाद कांग्रेस ने पुनः चुनाव में गड़बड़ी की बात दोहराई है। कांग्रेस प्रवक्ता पवन खेड़ा ने कहा है कि बिहार राज्य में 'गुंडाराज और भ्रष्टाचार' की स्थिति है और जनता बदलाव चाहती है। मतदाताओं का गुस्सा ईवीएम में दिखाई देगा। पटना बिहार में आयोजित प्रेस कांफ्रेंस में कांग्रेस प्रवक्ता पवन खेड़ा ने कहा कि बिहार के मतदाता एनडीए सरकार से नाराज है और मतदाताओं का गुस्सा ईवीएम में मतदान के जरिए दिखाई देगा। खेड़ा ने चुनाव आयोग पर निष्क्रियता का आरोप लगाते हुए कहा है कि आयोग मृतकों की तरह व्यवहार कर रहा है, जबकि चुनाव में भारी अनियमितता हो रही है। खेड़ा का कहना है कि कांग्रेस के बूथ स्तर के कार्यकर्ताओ ने 89 लाख से अधिक शिकायत की है।

वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने पर रेल मंत्री ने किया सामूहिक गायन,देशभर के रेल जोनों में गूंजा राष्ट्रगीत

नई दिल्ली,07 नवम्बर 2025। राष्ट्र गीत वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने पर रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने नई दिल्ली के रेल भवन में अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ सामूहिक गायन किया। इड़के तहत पूरे देश के रेलवे जोनों और मंडलों में भी इसी तरह के आयोजन हुए। रेल मंत्रालय के अनुसार,इस अवसर पर देश के विभिन्न रेलवे जोनों में भी विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए। मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस पर महाप्रबंधक विजय कुमार की उपस्थिति में वंदे मातरम् का भव्य आयोजन हुआ, वहीं हैदराबाद स्थित रेल निलयम में दक्षिण मध्य रेलवे के महाप्रबंधक संजय कुमार

श्रीवास्तव सहित अधिकारियों और कर्मचारियों ने राष्ट्रगीत का सामूहिक गायन किया। उत्तर रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी कार्यालय में भी इसी तरह का कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम के दौरान वंदे मातरम् का पूर्ण संस्करण सामूहिक रूप से गाया गया,जो संस्कृति मंत्रालय के मुख्य कार्यक्रम से लाइव जुड़ा था। इसके बाद रेल भवन में उपस्थित अधिकारियों और कर्मचारियों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का संबोधन भी सुना। इस मौके पर रेल मंत्री ने कहा कि वंदे मातरम् बीते 150 वर्षों से भारत की चेतना का उद्घोष रहा है। यह राष्ट्रगीत स्वतंत्रता संग्राम के समय से देशभक्ति, एकता और स्वाभिमान का प्रतीक रहा है। रेलवे मंत्रालय के इन आयोजनों ने भारत की सांस्कृतिक चेतना और राष्ट्रीय भावना को फिर से जीवंत कर दिया।

बिहार में विपक्ष फैला रहा है अफवाह,महिलाओं से 10-10 हजार रुपये वापस नहीं लिए जाएंगे : नीतीश

पटना,07 नवम्बर 2025। बिहार विधानसभा के दूसरे चरण के चुनाव के लिए राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। राजग के अन्य नेताओं की तरह प्रदेश के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भी शुक्रवार को केसरिया विधानसभा में जनता दल यूनाइटेड (जदयू) के उम्मीदवार शालिनी मिश्रा और कल्याणपुर विधानसभा

सीट से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के उम्मीदवार सचिन्द्र प्रसाद सिंह के समर्थन में जनसभा की। जनसभाओं को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने विपक्ष पर हमला किया। उन्होंने कहा कि विपक्षी दलों ने अब तक कुछ नहीं किया है, सिर्फ अफवाह फैलाने का काम किया है। उन्होंने महिलाओं को आश्वस्त करते हुए कहा कि जो 10-10 हजार रुपए दिए गए हैं, उन्हें वापस नहीं लिया जाएगा,अफवाहों में न पड़ें। मुख्यमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार ने हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों के हित में कार्य किया है। हमने मदरसों का सरकारीकरण किया है, वहीं मंदिरों की सुरक्षा भी बढ़ाई है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को धन्यवाद देते हुए नीतीश कुमार ने कहा कि प्रधानमंत्री बिहार के लिए लगातार काम कर रहे हैं और समय-समय पर यहां आकर जनता से पूछते हैं कि कोई परेशानी तो नहीं है। इस दौरान मुख्यमंत्री ने जनता से दोनों उम्मीदवारों को जीताने की अपील की।

रूसी सेना में 44 भारतीय अभी भी कार्यरत,जान का खतरा है,जॉब ऑफर से रहें दूर : विदेश मंत्रालय

नई दिल्ली,07 नवम्बर 2025। विदेश मंत्रालय ने एक बार फिर देश के नागरिकों से विदेश में नौकरी के अवसरों पर सावधानी बरतने की सलाह दी है। विशेष रूप से रूस की सेना में भर्ती को लेकर मंत्रालय ने चेतावनी भी दी है कि इस तरह के काम में जान को खतरा है। साथ ही बताया कि वर्तमान समय में रूसी सेना में 44 भारतीय नागरिक हैं। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने शुक्रवार को साप्ताहिक पत्रकार वार्ता में इसकी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि भारत ने एक बार फिर रूसी पक्ष के साथ भारतीयों को रूसी सेना में भर्ती किए जाने का मामला उठाया है और उनसे जल्द ही उन्हें कार्य निवृत्ति करने को कहा है। साथ ही इस तरह के नियुक्तियों पर रोक लगाने की भी मांग की है। प्रवक्ता ने बताया कि हमारी जानकारी के अनुसार इस समय 44 भारतीय रूसी सेना में काम कर रहे हैं उनके बारे में हम रूसी पक्ष से संपर्क में हैं।

देश आत्मनिर्भर और ग्रीन मोबिलिटी की ओर बढ़ रहा : नितिन गडकरी

भुवनेश्वर,07 नवम्बर 2025। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि भारत अब ईंधन आयातक से ईंधन निर्यातक देश बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। देश में एथेनॉल, मिथेनॉल, बायो-एलएनजी, सीएनजी और ग्रीन हाइड्रोजन के उत्पादन और उपयोग में तेजी से बढ़ोतरी हो रही है, जिससे आत्मनिर्भर और पर्यावरण-अनुकूल परिवहन व्यवस्था की राह मजबूत हो रही है। भुवनेश्वर में आयोजित भारतीय सड़क कांग्रेस (आईआरसी) के 84 वें वार्षिक सत्र को संबोधित करते हुए गडकरी ने कहा कि सड़क सुरक्षा सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में है। इसके लिए आधुनिक इंजीनियरिंग मानकों, इंटेलिजेंट ट्रांसपोर्ट सिस्टम और जन-जागरूकता कार्यक्रमों को तेजी से अपनाया जा रहा है ताकि सड़कों को सुरक्षित और सुगम बनाया जा सके। इस अवसर पर ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी, लोक निर्माण मंत्री पृथ्वीराज

हरिचंदन, आईआरसी अध्यक्ष प्रो. मनोरंजन परिदा और वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे। गडकरी ने कहा कि सड़क अभियंता देश की प्रगति के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। उनकी सटीकता और नवाचार ही बेहतर डीपीआर तैयार करने और सुरक्षित राजमार्ग विकसित करने में मदद करते हैं। राष्ट्रीय राजमार्ग निर्माण में बायो-बिटुमेन और रिसाइकल प्लास्टिक के उपयोग से सड़कें अधिक टिकाऊ और किफायती बन रही हैं,साथ ही यह हरित बुनियादी ढांचे के लक्ष्यों को भी सशक्त कर रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार का लक्ष्य नवाचार और सतत गतिशीलता पर आधारित विश्वस्तरीय अवसंरचना का निर्माण करना है। यह बदलाव न केवल रोजगार के अवसर पैदा करेगा बल्कि देश के इन्फ्रा-स्किल इकोसिस्टम को भी मजबूत बनाते हुए भारत को आत्मनिर्भर और सशक्त भविष्य की ओर ले जाएगा।

संपादकीय

आत्मघात की मजबूरी

यह तथ्य हृदयविदारक ही है कि देश में एक साल के दौरान करीब चौदह हजार छात्रों ने आत्महत्या की। पहली नजर में आत्मघात के मूल में पढ़ाई का दबाव,छात्रों की संवेदनशीलता और तंत्र की नाकामी बताई जा सकती है। लेकिन सवाल है कि हमारा तंत्र क्यों संवेदनहीन बना हुआ है? यही वजह है कि सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकारों को तलब करके इस बाबत विस्तृत विवरण मांगा है। साथ ही सवाल पूछा है कि क्या देश के सभी शिक्षण संस्थान छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जिम्मेदारी निभा रहे हैं? विडंबना यह है कि देश में मोटी पगार वाली नौकरियों की गलाकाट स्पर्धा में शिक्षण संस्थाएं व शिक्षक उस दायित्व को भूल गए हैं, जो छात्रों को विषयगत शिक्षा के साथ विषम परिस्थितियों के बीच जीवन जीने की कला सिखा सके। उन्हें व्यावहारिक जीवन का कौशल सिखाने के साथ ही चुनौतियों से जूझने की मानसिक शक्ति विकसित करने के लिए तैयार कर सकें। आखिर किसी परिवार की उम्मीद को किस स्थिति में यह सोचना पड़ता है कि मौत को गले लगाना अंतिम विकल्प है? शिक्षा परिसरों में ऐसी स्थितियां क्यों विकसित हो रही हैं कि विद्यार्थी जीवन से हार मानने लगे हैं? निस्संदेह, शिक्षण संस्थानों का एक मात्र लक्ष्य किताबी ज्ञान देकर डिग्री बांटने तक ही नहीं हो सकता। शिक्षण संस्थानों के प्रबंधन तंत्र को अपने परिसर में समता, ममता और सहजता का वातावरण तैयार करना होगा। जहां किसी भी तरह तनाव, मानसिक कष्ट व भेदभाव नजर न आए और कारगर शिकायत निवारण तंत्र विकसित हो। ऐसा न होने पर ही सरस्वती के मंदिरों में तनाव की फसल उग रही है। हमारे नीति-नियंता इस दुखदायी स्थिति पर अंकुश लगाने हेतु किसी तरह की गंभीर पहल करते नजर नहीं आते। यदि गाल बजाने वाले राजनेता कोई कदम उठाने की लोकलुभावनी घोषणा करते भी हैं तो भी जमीनी हकीकत बदलती नजर नहीं आती। घोषणाएं प्रभावी भी होनी चाहिए। सवाल यह भी है कि शैक्षणिक परिसरों में आत्महत्या रोकने के लिये जो कदम केंद्र व राज्य सरकारों को उठाने चाहिए थे, उसके बाबत देश की शीर्ष अदालत को क्यों पहल करनी चाहिए? इस मामले में सख्त रवैया अपनाते हुए सर्वोच्च न्यायालय को कहना पड़ा कि केंद्र व राज्य सरकारें आठ सप्ताह के भीतर वह विस्तृत ब्योरा प्रस्तुत करें, जो आत्महत्या रोकने के दिशा-निर्देशों का क्रियान्वयन सुनिश्चित करे। दुखद स्थिति यह भी है कि देश में छात्रों के आत्मघात के मामले लगातार बढ़ रहे हैं,इसकी पुष्टि खुद राष्ट्रीय अपराध रेकॉर्ड ब्यूरो भी कर रहा है। जो साल 2023 में देश की शिक्षण संस्थाओं में 13,892 छात्रों की मौत को गले लगाने की बात स्वीकार करता है। सबसे दुखद स्थिति यह है कि यह संख्या पिछले एक दशक में पैंसठ प्रतिशत बढ़ी है। वहीं इस आंकड़े की तुलना यदि वर्ष 2019 से करें तो यह वृद्धि चौंतीस फीसदी दर्ज की गई है। जाहिर बात है कि यह वृद्धि छात्रों की मानसिक पीड़ा, हताशा और भविष्य के प्रति निराश होने की स्थिति को ही दर्शाती है। निश्चित रूप से हमारी शिक्षा की विसंगतियां भी इन आत्महत्याओं के मूल में हैं। देश में भाषा व बोर्ड स्तर पर पाठ्यक्रम व शिक्षण की स्थिति में खासा अंतर है। पैसे वालों के बच्चे महंगे स्कूलों में पढ़ते हैं। रही-सही कसर उनके महंगे कोचिंग सेंटरों द्वारा पूरी की जाती है। हिंदी माध्यम से पढ़ने वाले छात्रों की सारी ऊर्जा अपने ज्ञान को अंग्रेजी में ट्रांसलेट करने में चली जाती है। कालांतर में वे उच्च शिक्षा संस्थानों में हीनग्रंथि का शिकार हो जाते हैं। ऐसी तमाम ग्रंथियां छात्रों को अपराधबोध से भर देती हैं। पढ़ाई के दबाव के अलावा शिक्षा संस्थानों के परिसर में हिंसा और जातिगत भेदभाव की खबरें भी आती हैं जो संवेदनशील छात्रों को हताशा से भर देती हैं। निश्चय ही सजगता व संवेदनशीलता से ऐसी परिस्थितियों से छात्रों को बचाया सकता है। यही वजह है कि देश की शीर्ष अदालत ने अपने फैसले में शिक्षण संस्थानों और सरकार को जरूरी दिशानिर्देश दिए हैं।

जेएनयू छात्र संघ चुनाव में कैसे 'राइट' पर भारी पड़ा लेफ्ट

अध्यक्ष पद पर वाम उम्मीदवार अदिति मिश्रा की जीत सबसे ज्यादा सुर्खियों में रही। अदिति जेएनयू के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज से शोध कर रही हैं और उन्होंने अपने चुनाव प्रचार के दौरान फीस वृद्धि,शोध छात्रवृत्ति,हॉस्टल में सुविधाओं की कमी और छात्र सुरक्षा जैसे मुद्दों को मुख्य केंद्र में रखा। उन्होंने कहा था कि 'जेएनयू का संघर्ष सिर्फ विचारों का नहीं,बल्कि शिक्षा को सबके लिए सुलभ बनाने का है।' उनका यह सीधा और भावनात्मक संदेश छात्रों के दिल में उतर गया। दूसरी ओर, एबीवीपी की उम्मीदवार तन्या कुमारी राष्ट्रवाद और संगठनात्मक अनुशासन की बात करती रहीं, पर उनकी बातों में वह सादगी और जमीनी जुड़ाव नहीं दिखा जो अदिति के अभियान में झलक रहा था।

संजय सक्सेना,लखनऊ

नई दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में इस साल के छात्रसंघ चुनाव नतीजों ने फिर इतिहास दोहरा दिया। राइट विंग के उम्मीदवारों को हाशिये पर ढकेल कर यहां के छात्रों ने लेफ्ट की विचारधारा को तवज्जो दी। वामपंथी छात्र संगठनों के साझा गठबंधन लेफ्ट यूनिटी ने चारों केंद्रीय पदों पर जीत दर्ज कर एक बार फिर साबित किया कि जेएनयू की राजनीति में अभी भी लाल विचारधारा की जड़ें गहरी हैं। वहीं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) को एक भी केंद्रीय पद पर जीत नहीं मिल सकी, जो उसके लिए पिछले कुछ वर्षों में सबसे बड़ा झटका माना जा रहा है। यह केवल एक चुनावी नतीजा नहीं, बल्कि छात्र राजनीति के बदलते रुख, विचारधारात्मक संघर्ष और नए युग की शुरुआत का संकेत है।पिछले पांच वर्षों में जेएनयू की राजनीति में जिस तरह के उतार-चढ़ाव देखे गए, उसने इस बार के नतीजों को और दिलचस्प बना दिया। 2020 के बाद से विश्वविद्यालय में छात्र संघ चुनाव लगातार राजनीतिक खींचतान का केंद्र रहे हैं। कभी एबीवीपी ने कैंपस में अपनी उपस्थिति मजबूत की, तो कभी वाम छात्र संगठन आपसी मतभेदों से जूझते दिखे। मगर इस बार हालात उलट गए। वामदलों ने पहली बार बेहद संगठित रणनीति अपनाई कर एकता बनाए रखते हुए उन्होंने हर संकाय और हर हॉस्टल स्तर तक गहराई से काम किया। यही कारण रहा कि अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, महासचिव और संयुक्त सचिव, चारों पदों पर लेफ्ट यूनिटी के उम्मीदवारों ने एबीवीपी को बड़े अंतर से हराया। इस बार के चुनाव में एक दिलचस्प बात यह रही कि मुद्दों का फोकस नारेबाजी से हटकर व्यावहारिक समस्याओं पर रहा। पिछले वर्षों में जहाँ बहसें 'देशविरोधी' और 'राष्ट्रभक्ति' जैसे मुद्दों तक सीमित रह जाती थीं, इस बार छात्र अपने वास्तविक कैंपस जीवन की दिक्कतों पर ज्यादा मुखर रहे। हॉस्टल फीस,रिसर्च फंड, लैब की स्थिति, और छात्र संगठनों की पारदर्शिता पर गहन चर्चा हुई। वाम संगठनों ने इस बदलाव को भांपते हुए अपने अभियान को 'स्टूडेंट्स फॉर स्टूडेंट्स' की थीम पर केंद्रित किया, जबकि एबीवीपी पारंपरिक नारों और रैलियों तक सिमटी रह गई। मतदान प्रतिशत में कमी भी इस चुनाव का एक दिलचस्प पहलू रहा। इस बार लगभग 67 प्रतिशत छात्रों ने मतदान किया, जो पिछले वर्षों की तुलना में कुछ कम था। विश्लेषकों के अनुसार,यह कमी बताती है कि छात्र राजनीति में अब विचारधारा से ज्यादा 'काम करने वाले' नेतृत्व की तलाश बढ़ रही है। वाम संगठनों ने इस भावना को समझा और युवाओं से सीधे संवाद किया कर क्लास टू क्लास कैंपेन, कैफे चर्चाएँ, और सोशल मीडिया पर सक्रिय अभियान ने माहौल बनाया। जेएनयू के चुनाव परिणामों का असर सिर्फ इस विश्वविद्यालय तक सीमित नहीं रहता। ऐतिहासिक रूप से यह विश्वविद्यालय देश के अन्य विश्वविद्यालयों की छात्र राजनीति की दिशा तय करता रहा है। जब जेएनयू में लेफ्ट का झंडा बुलंद होता है,तो इलाहाबाद, हैदराबाद, कोलकाता और भोपाल जैसे शहरों में भी उसकी गूंज सुनाई देती है। इसी साल हैदराबाद सेंट्रल यूनिवर्सिटी और अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में भी एबीवीपी को अपेक्षित सफलता नहीं मिल सकी थी। दिल्ली यूनिवर्सिटी में एबीवीपी ने जीत दर्ज की थी, मगर जेएनयू में उसकी हार ने छात्र राजनीति के समीकरणों को फिर उलझा दिया है। एबीवीपी की इस हार ने उसके अंदर आत्मचिंतन की लहर पैदा की है। संगठन के वरिष्ठ पदाधिकारियों का कहना है कि यह हार केवल चुनावी नहीं, संगठनात्मक चेतावनी भी है। वाम संगठनों की सक्रियता और एकजुटता ने उसे घेर लिया है। हालांकि, एबीवीपी ने यह दावा भी किया कि उसने पार्षद स्तर पर कई सीटें जीती हैं और यह संकेत है कि संगठन की जड़ें अभी भी मौजूद हैं। परंतु केंद्रीय पदों पर हार ने यह साबित किया कि जेएनयू के मुख्य नेतृत्व पर अब वामपंथ का वर्चस्व एक बार फिर स्थापित हो गया है। कैंपस में जीत की घोषणा होते ही वामपंथी कार्यकर्ताओं ने लाल झंडों और नारेबाज़ी के साथ पूरे परिसर को उत्सव में बदल दिया। छात्रों ने 'लाल सलाम' के नारे लगाए और देर रात तक जश्न मनाया। दूसरी ओर, एबीवीपी के कार्यकर्ता शांत दिखाई दिए।

उन्होंने कहा कि वे संगठन को फिर से मजबूत करेंगे और छात्रों के मुद्दों को लेकर संघर्ष जारी रखेंगे। यह तस्वीर भारतीय छात्र राजनीति की असली आत्मा दिखाती है, जहाँ हार के बाद भी उम्मीद बनी रहती है और हर चुनाव एक नई कहानी लिखता है।

पिछले पाँच वर्षों में हुए बदलावों की बहार अब साफ दिखती है। 2019 से लेकर 2025 तक,जेएनयू ने कई वैचारिक प्रयोग देखे हैं, कभी एबीवीपी ने अपनी पकड़ बढ़ाई, कभी लेफ्ट यूनिटी में दरार आई, तो कभी एनएसयूआई और अन्य समूहों ने गठबंधन की कोशिश की। पर अब लगता है कि छात्र वर्ग फिर से वैचारिक रूप से वाम झुकाव की ओर लौटा है। इसका कारण शायद यह भी है कि बढ़ती महंगाई, शिक्षा का व्यापारीकरण और रोज़गार की कमी जैसे मसले अब युवाओं को सीधे प्रभावित कर रहे हैं। ऐसे में वाम विचारधारा उन्हें अपने करीब खींचने में कामयाब रही है। जेएनयू के इस चुनावी परिणाम का संदेश स्पष्ट है, छात्र राजनीति में एक बार फिर विचारों की ताकत ने जीत दर्ज की है। सत्ता या संगठन नहीं,बल्कि मुद्दों और संवेदनाओं ने निर्णायक भूमिका निभाई। यह बदलाव सिर्फ जेएनयू के गलियारों तक सीमित नहीं रहेगा, इसका असर देशभर के विश्वविद्यालयों में महसूस होगा। भविष्य में जब छात्रसंघ चुनाव फिर होंगे, तो यह परिणाम संदर्भ के रूप में याद किया जाता है कि कैसे जेएनयू ने फिर से बताया कि राजनीति केवल जीतने का नहीं,सोच बदलने का जरिया भी है।

इस जीत और हार से परे एक बात स्पष्ट भारतीय विश्वविद्यालयों में छात्र राजनीति अभी भी जिंदा है, सक्रिय है और विचारों से भरी हुई है। जेएनयू के इस लाल परचम ने यह दिखा दिया है कि बदलाव की बहार फिर लौट आई है। एबीवीपी के लिए यह ठहराव आत्ममंथन का क्षण है, और वाम छात्र संगठनों के लिए यह जिम्मेदारी का दौर। आखिरकार, जो जीतता है उसे अगली सुबह उम्मीदों का बोझ भी उठाना पड़ता है और यही असली राजनीति है, जो जेएनयू के हर कोने में सांस ले रही है।

प्राथमिक स्तर से कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा की शुरूआत एक परिवर्तनकारी पहल

भारत सरकार की यह योजना एनईपी 2020 की उस भावना को साकार करती है,जो शिक्षा को केवल नौकरी प्राप्ति का साधन नहीं बल्कि जीवन कौशल,तकनीकी समझ और मानवीय मूल्यों से युक्त नागरिक निर्माण का माध्यम मानती है। प्राथमिक स्तर से एआई शिक्षा बच्चों में तार्किक सोच, विश्लेषण क्षमता और जिम्मेदार तकनीकी दृष्टिकोण विकसित करने का अवसर प्रदान करेगी। भारत का शिक्षण तंत्र लंबे समय तक पारंपरिक पद्धतियों पर आधारित रहा है,जहां ज्ञान को रटना और परीक्षाओं में अंक प्राप्त करना ही सफलता का पैमाना माना गया। लेकिन बदलती वैश्विक अर्थव्यवस्था, डिजिटल युग और चौथी औद्योगिक क्रांति के दौर में यह दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं रह गया है।

डॉ प्रियंका सौरभ

भारत सरकार द्वारा प्राथमिक स्तर से कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की शिक्षा शुरू करने की योजना भारतीय शिक्षण प्रणाली के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में देखी जा रही है। यह पहल न केवल बच्चों को भविष्य की तकनीकी दुनिया के लिए तैयार करने का प्रयास है, बल्कि यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के मूल उद्देश्यों-समग्र, बहुविषयी, कौशल आधारित और नवाचार उन्मुख शिक्षा - के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। यह कदम भारत के शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र को पारंपरिक रटंत प्रणाली से निकालकर जिज्ञासा, रचनात्मकता और तर्कशीलता की दिशा में मोड़ने वाला है।

आज शिक्षा का उद्देश्य केवल साक्षरता नहीं, बल्कि 'स्मार्ट नागरिक' बनाना है–जो न केवल सूचना समझ सके, बल्कि उसका रचनात्मक और नैतिक उपयोग भी कर सके। इसी परिप्रेक्ष्य में सरकार का यह निर्णय कि प्राथमिक स्तर से ही बच्चों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मूल समझ दी जाए,एक दूरदर्शी और नीतिगत दृष्टि से परिपक्व कदम है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रमुख उद्देश्य इक्कीसवीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा प्रणाली का रूपांतरण है। नीति यह कहती है कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बच्चे की जिज्ञासा,प्रयोगशीलता और सृजनशीलता को प्रोत्साहित करे। एनईपी 2020 का सबसे बड़ा फोकस यह है कि बच्चों में 'सीखने की खुशी' विकसित हो और शिक्षा रटने की बजाय सोचने, समझने और खोजने की प्रक्रिया बने। इस दृष्टि से देखा जाए तो एआई शिक्षा का आरंभ इसी विचार का विस्तार है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल तकनीकी विषय नहीं है,बल्कि यह सोचने,विश्लेषण करने और समस्या समाधान की कला को विकसित करने का माध्यम है। जब बच्चे प्रारंभिक स्तर से ही तर्कशक्ति,पैटर्न पहचान और आंकड़ों को समझने की क्षमता सीखते हैं, तो वे जीवन के हर क्षेत्र में अधिक समझदार निर्णय ले सकते हैं। यही एनईपी 2020 का उद्देश्य भी है - ऐसी शिक्षा जो बच्चे को केवल ज्ञानवान नहीं, बल्कि विवेकवान बनाए। एआई को प्राथमिक स्तर पर शामिल करने का एक और बड़ा लाभ यह है कि यह शिक्षा को बहुविषयी बनाता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी कक्षा में बच्चों को रोबोट की मदद से कहानी सुनाई जाती है, तो वे एक साथ भाषा, गणित, विज्ञान और नैतिकता सीखते हैं। इस तरह कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से शिक्षा का चरित्र 'विषय-केंद्रित' न रहकर 'अनुभव-केंद्रित' बनता है। एनईपी 2020 का यही लक्ष्य है कि शिक्षा बच्चों के अनुभव और रुचि के आधार पर दी जाए,ताकि सीखना एक स्वाभाविक प्रक्रिया बन सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में 'मौलिक साक्षरता और गणनात्मक क्षमता' यानी बुनियादी पढ़ने-लिखने और गिनने की योग्यता को प्राथमिक चरण की सबसे बड़ी प्राथमिकता बताया गया है। यदि इसी स्तर पर बच्चों को एआई की प्रारंभिक अवधारणाएँ, जैसे - तर्क श्रृंखला, डेटा पहचान, पैटर्न समझना या निर्णय लेना-सिखाई जाएं,तो उनकी सोचने और विश्लेषण करने की शक्ति कई गुना बढ़ सकती है। यह उन्हें न केवल डिजिटल युग के अनुकूल बनाता है, बल्कि भविष्य के रोजगार और नवाचार की दिशा में भी सक्षम बनाता है। हालांकि,इस योजना के कार्यान्वयन के साथ कुछ चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं। सबसे बड़ी चुनौती है-डिजिटल असमानता। भारत के कई ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में अभी भी इंटरनेट, कंप्यूटर और प्रशिक्षित शिक्षकों की पर्याप्त उपलब्धता नहीं है। यदि एआई शिक्षा को समान रूप से लागू नहीं किया गया तो यह अमीर और गरीब बच्चों के बीच एक नई 'डिजिटल खाई' पैदा कर सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति समावेशिता और समान अवसर पर बल देती है,इसलिए सरकार को इस दिशा में विशेष ध्यान देना होगा कि हर बच्चा, चाहे वह किसी भी पृष्ठभूमि से हो, एआई शिक्षा का लाभ उठा सके। शिक्षक प्रशिक्षण इस पहल की दूसरी बड़ी आवश्यकता है। एआई शिक्षा को सफल बनाने के लिए केवल पाठ्यपुस्तकें नहीं,बल्कि सक्षम और प्रशिक्षित शिक्षक भी आवश्यक हैं। एनईपी 2020 शिक्षकों को 'सीखने का सहायक' मानती है, जो बच्चों को प्रेरित करें, मार्गदर्शन दें और जिज्ञासा को पोषित करें। इसके लिए शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार करने होंगे,जिसमें उन्हें एआई की बुनियादी समझ,नैतिक पक्ष और शिक्षण में तकनीक के उपयोग की विधियाँ सिखाई जाएं। एआई शिक्षा का एक और महत्वपूर्ण पहलू नैतिकता है। यदि बच्चों को केवल तकनीक सिखाई जाए और उसमें मानवीय संवेदनाओं, जिम्मेदारी और सह-अस्तित्व का भाव न जोड़ा जाए,तो यह शिक्षा अधूरी होगी। एनईपी 2020 ने 'नैतिक और मानवीय मूल्यों' को शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बताया है। अतः एआई के साथ'नैतिक एआई'की अवधारणा सिखाना अनिवार्य होना चाहिए, जिससे बच्चे समझें कि तकनीक का उपयोग समाज और मानवता के कल्याण के लिए कैसे किया जा सकता है।

इस योजना को सफल बनाने के लिए पाठ्यचर्या में भी नवाचार की आवश्यकता है। एआई शिक्षा को बोझ न बनाकर बच्चों के दैनिक जीवन से जोड़ना होगा। उदाहरण के लिए, खेल-खेल में मशीन की सोच समझाना,चित्रों से आंकड़ों का विश्लेषण सिखाना या कहानियों के माध्यम से कार्य-प्रणाली का अर्थ समझाना–ऐसे उपायों से बच्चे इसे सहज रूप से ग्रहण करेंगे। एआई को बच्चों के अनुभवात्मक और खोज-आधारित शिक्षण का हिस्सा बनाया जा सकता है। यह पहल भारत के लिए वैश्विक प्रतिस्पर्धा के दौर में भी एक रणनीतिक अवसर प्रस्तुत करती है। आज विश्व के विकसित देश प्राथमिक स्तर पर ही बच्चों को कोडिंग, डेटा साक्षरता और एआई आधारित समस्या समाधान सिखा रहे हैं। यदि भारत भी अपने बच्चों को प्रारंभिक अवस्था से इस दिशा में तैयार करता है, तो आने वाले दशक में वह 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता का केंद्र' बनने की दिशा में अग्रसर हो सकता है। इससे न केवल रोजगार के नए अवसर खुलेंगे, बल्कि भारत नवाचार और तकनीकी नेतृत्व में भी अग्रणी बन सकता है।

श्री सुधाकर आशावादी

राजनीति में भाषा की मर्यादा का प्रश्न

जिस देश में राजनीति को राष्ट्र कल्याण और जनसेवा के लिए समर्पित नहीं समझा जाता, वहां राजनीतिक शुचिता की बात करना ही बेमानी है। विगत कुछ वर्षों से सत्ता स्वार्थ के लिए राजनीतिक दल और उनके समर्थक जिस प्रकार की नकारात्मक राजनीति कर रहे हैं तथा भीड़ जुटाने के लिए धन बल का प्रयोग कर रहे हैं, उससे लगता है कि राजनीति विशुद्ध रूप से व्यवसायिक होती जा रही है, जिसका उद्देश्य ही जनता को झूठ, फरेब,झूठे वादों से भ्रमित करके देश के लोकतंत्र को छलना है। यदि ऐसा न होता, तो सोची समझी शतरंजी चालों से एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए राजनीतिक दलों से जुड़े लोग न तो भाषाई मर्यादा लांघते और न ही विघटनकारी चालें चलकर समाज को बांटने का प्रयास करते। न ही राजनीति में भारतीय सेना को घसीटते और न ही पप्पू, अप्पू, टप्पू जैसे तीन बंदरों की तुलना राजनीतिक चरित्रों से की जाती। न ही बदले में दो बंदरों गप्पू और चम्पू की बात की जाती। यदि किसी संवैधानिक पद पर बैठा व्यक्ति ऐसी बातें करे, तो स्वाभाविक रूप से प्रश्न उठता है, कि क्या किसी उच्च पद पर आसीन अनुकरणीय व्यक्ति द्वारा ऐसी भाषा का प्रयोग करना उचित है? यह तो बानगी भर है। इससे अधिक भाषाई मर्यादा तब तार तार होती है, जब पत्रकार वार्ताओं में खुला झूठ बोलकर देश के बड़े नायकों के विरुद्ध अपमानजनक भाषा का प्रयोग किया जाता है। बेशर्मी से ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है, जिन शब्दों के अर्थ और परिभाषा का ज्ञान भी आरोप लगाने वाले व्यक्ति को नहीं होता। हास्यापद स्थिति तब होती है, जब दूसरे पक्ष के लोग भी अमर्यादित भाषा का विरोध करने की हिम्मत जुटाने के बदले अमर्यादित भाषा के बचाव में कुतर्क देने लगते हैं। भाषा की मर्यादा लांघने में किसी भी एक दल या एक नेता को दोषी नहीं कहा जा सकता। राजनीति के हमाम में सभी एक जैसे हैं, कोई थोड़ा कम, कोई थोडा अधिक। यूँ तो अमर्यादित भाषा का प्रयोग करने पर दण्ड का प्रावधान है,किन्तु मानहानि के वाद में दण्ड की औपचारिकता कितनी निभाई जाती है, यह भी किसी से छिपा नहीं है। ऐसे में भयमुक्त होकर भाषाई मर्यादा को लांघना सामान्य बात हो गई है। इस प्रवृत्ति को समय से नहीं रोका गया, तो देश में अराजकता फ़ैलाने वाले तत्वों की संख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ने से रोक पाना आसान नहीं होगा।

समय का दर्शन : समय के यथार्थ संयोजन से जीवन समर्थ,सशक्त

बेंजामिन फ्रैंकलिन ने कहा था– 'Lost time is never found again' – बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता। समय वह अनमोल संपदा

जो न किसी के लिए रुकती
न किसी के लिए लौटती
यह निरंतर गतिशील

संजीव ठाकुर रायपुर,छत्तीसगढ़

अविराम,अनश्वर और सर्वव्यापी। जीवन की सफलता, सार्थकता और समृद्धि का आधार यदि किसी एक तत्व को कहा जाए तो निस्संदेह वह 'समय का सदुपयोग' है। यह कथन न केवल यथार्थ का उद्घाटन करता है बल्कि जीवन के अनुशासन की दिशा भी दिखाता है। धन,वैभव,प्रतिष्ठा ये सब खोकर पुनः अर्जित किए जा सकते हैं, किंतु समय का एक क्षण खो जाने पर वह सदा के लिए इतिहास बन जाता है।

भारतीय संतों ने भी यही चेताया
'काल करे सो आज कर,आज करे सो अब,
पल में परलय होएगी,बहुरि करेगा कब।

यह दोहा समय के अनमोल क्षणों की पुकार है,जो मनुष्य को आलस्य और विलंब की दलदल से बाहर निकालने का प्रयास करता है। प्रसिद्ध लेखक मेसन ने भी कहा है–'सोने के कण की तरह समय का हर क्षण मूल्यवान है।'सच ही तो है,स्टेशन पर खड़ी रेलगाड़ी अपने यात्रियों की प्रतीक्षा नहीं करती;देर से पहुंचने वाला व्यक्ति केवल हाथ मलता रह जाता है। प्रकृति स्वयं समय की शिक्षिका है,यदि वर्षा ऋतु में वर्षा समय पर न हो तो फसलें सूख जाती हैं; यदि सूरज समय पर न उगे तो जीवन का क्रम बाधित हो जाता है। तुलसीदास ने कहा,'का वर्षा जब कृषि सुखावे, भल समय जब बाढ़े उपजावे। ' यह उदाहरण स्पष्ट करता है कि समय की अनदेखी विनाश का कारण बन सकती है। इतिहास गवाह है कि जिन्होंने समय के साथ अनुशासन और श्रम को अपना आदर्श बनाया, वही युगपुरुष बने। चाहे महात्मा गांधी हों,आइंस्टीन हों या स्टीव जॉब्स इन सबने समय का सदुपयोग कर अपने विचारों से मानवता को नई दिशा दी। इंग्लैंड की अनुशासनप्रियता और समयनिष्ठा ने उसे ग्रेट ब्रिटेन का दर्जा दिलाया, जिसने कभी कहा था– 'The sun never sets on the British Empire.' हालांकि उनका अनुशासन कई बार दमनकारी भी रहा,परंतु यह भी सत्य है कि समय के प्रति उनकी सजगता ने उन्हें शक्ति और समृद्धि दी। भारत ने भी जब-जब समय के मूल्य को पहचाना, तब-तब उसने विश्व में अपना लोहा मनवाया। हमारे वैज्ञानिकों-डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम,सी.वी. रमन,और होमी भाभा ने समय की पाबंदी और अनुशासन से अनुसंधान के शिखर को छुआ। उन्होंने दिखाया कि कठोर परिश्रम और समय का प्रबंधन साधारण मनुष्य को भी असाधारण बना सकता है। समय और अनुशासन एक-दूसरे के पर्याय हैं। अनुशासन के बिना समय की उपयोगिता संभव नहीं, और समय के बिना अनुशासन का कोई अर्थ नहीं। जीवन के जिस कार्य को हम सबसे कठिन मानते हैं, उसे सबसे पहले करना ही सफलता की कुंजी है। जैसा कि नेपोलियन बोनापार्ट ने कहा था– 'Take time to deliberate, but when the time for action comes, stop thinking and go in. ' विद्यार्थी जीवन में समय का महत्व सर्वोपरि है। समय का नियोजन और आत्मसंयम विद्यार्थी को साधारण से असाधारण बना देता है। जो विद्यार्थी समय के मूल्य को समझते हुए अध्ययन करते हैं,वे न केवल परीक्षाओं में सफल होते हैं बल्कि जीवन में भी ऊँचाइयाँ छूते हैं। देर से उठने वाले और विलंब से कार्य करने वाले हमेशा परिस्थितियों से संघर्ष करते रहते हैं।

खेल : राष्ट्र निर्माण की नई धुरी

डॉ सत्यवान सौरभ

भारत में खेलों को लंबे समय तक एक 'विवेकाधीन क्षेत्र' के रूप में देखा गया है यानी एक ऐसी गतिविधि जिसे चाहें तो करें, चाहें तो छोड़ दें। परंतु बदलते वैश्विक परिदृश्य में खेल अब सिर्फ मैदान की बात नहीं रहे। यह स्वास्थ्य, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, सामाजिक एकता और अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा–सभी से सीधे जुड़े हैं। खेलों को राष्ट्रीय विकासात्मक प्राथमिकता के रूप में मान्यता देना केवल खिलाड़ियों के हित में नहीं, बल्कि राष्ट्र की समग्र प्रगति की शर्त है। अब समय है कि नीति, शासन और समाज तीनों मिलकर इस परिवर्तन को संस्थागत रूप दें। भारत जैसे विशाल और युवा देश में खेलों की भूमिका केवल मनोरंजन या अवकाश तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। खेल अनुशासन,आत्म विश्वास और सामूहिकता के ऐसे मूल्यों को जन्म देता है जो किसी भी समाज की प्रगति के लिए आवश्यक हैं। दुर्भाग्य से,भारत में खेलों को आज भी 'वैकल्पिक' समझा जाता है। बजट में उनका हिस्सा सीमित है, शिक्षा में उनका स्थान गौण है और सरकारी तंत्र में वे अक्सर प्रशासनिक औपचारिकता बनकर रह जाते हैं। यही कारण है कि खेलों का समग्र विकास एक सशक्त संस्थागत ढाँचे के अभाव में अधूरा रह जाता है। खेलों को राष्ट्रीय विकासात्मक प्राथमिकता के रूप में मान्यता देने की आवश्यकता केवल पदक जीतने के लिए नहीं, बल्कि उस समग्र मानव विकास के लिए है, जो स्वस्थ, अनुशासित और आत्मनिर्भर समाज की नींव रखता है। भारत के परिप्रेक्ष्य में खेलों को प्राथमिकता देने के कई ठोस कारण हैं। सबसे पहले, यह जनस्वास्थ्य और उत्पादकता से जुड़ा है। जीवनशैली-जनित बीमारियाँ जैसे मधुमेह,मोटापा और हृदय रोग आज लाखों लोगों को प्रभावित कर रही हैं। इन पर होने वाला सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यय देश की विकास दर को प्रभावित करता है। यदि खेल संस्कृति को प्राथमिकता दी जाए तो नागरिकों की जीवनशैली सुधरेगी, स्वास्थ्य व्यय घटेगा और कार्यक्षमता बढ़ेगी। स्वस्थ जनसंख्या अपने आप में आर्थिक पूंजी होती है। दूसरा कारण सामाजिक समावेशन और समानता का है। खेल समाज के हर वर्ग को जोड़ने का माध्यम है। जब एक ग्रामीण खिलाड़ी ओलंपिक में पदक जीतता है, तो वह केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं बल्कि सामाजिक गतिशीलता का प्रतीक बनता है। खेल जाति, वर्ग, धर्म और भाषा के भेद मिटाकर एक साझा राष्ट्रीय पहचान गढ़ते हैं। यही समावेशी चरित्र उन्हें राष्ट्र निर्माण का उपकरण बनाता है। तीसरा कारण आर्थिक है। खेल अब एक उद्योग है। कोचिंग,उपकरण निर्माण, आयोजन, मीडिया, टूरिज़्म और फिटनेस जैसे क्षेत्रों में लाखों रोजगार सृजित हो सकते हैं। भारत में खेल उद्योग की वार्षिक वृद्धि दर लगभग 8-10 प्रतिशत आंकी गई है। यदि इसे प्राथमिकता दी जाए तो यह 'स्पोर्ट्स इकॉनमी' राष्ट्रीय सकल उत्पाद का महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकती है। खेलों को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाने का चौथा पहलू अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा और कूटनीति से जुड़ा है। जब कोई राष्ट्र खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है, तो वह न केवल अपने झंडे को ऊँचा करता है बल्कि वैश्विक मंच पर अपनी सॉफ्ट पावर भी स्थापित करता है। खेल राष्ट्रों के बीच सांस्कृतिक संवाद का माध्यम हैं।

सुविचार

क्रोध से भ्रम पैदा होता है, भ्रम से बुद्धि व्यग्र होती है जब बुद्धि व्यग्र होती है तब तर्क नष्ट हो जाता है और जब तर्क नष्ट हो जाता है तब व्यक्ति का पतन हो जाता है।

सूचना

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।
-सम्पादक

'वंदे मातरम्' के स्वर से गूंज उठा पी.जी. कॉलेज ऑडिटोरियम

सामूहिक गायन के माध्यम से सरगुजा में राष्ट्रभक्ति और एकता का संदेश

भव्य आयोजन में शामिल हुए मंत्री राजेश अग्रवाल, प्रदेश महामंत्री अखिलेश सोनी, जिलाध्यक्ष भारत सिंह सिसोदिया सहित जनप्रतिनिधि व सैकड़ों नागरिक

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,07 नवम्बर 2025 (घटती-घटना)।

आज अंबिकापुर स्थित पी.जी. कॉलेज ऑडिटोरियम भवन में भाजपा सरगुजा द्वारा 'वंदे मातरम् गीत का सामूहिक गायन' कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में छत्तीसगढ़ शासन के मंत्री राजेश अग्रवाल, विशिष्ट अतिथि के रूप में भाजपा के प्रदेश महामंत्री अखिलेश सोनी, भाजपा जिलाध्यक्ष भारत सिंह सिसोदिया, विधायक प्रबोध मिंज, विधायक राजकुमार टोप्पो, महापौर मंजूषा टोप्पो एवं जिला पंचायत अध्यक्ष निरूपा सिंह की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम की शुरुआत भारत माता की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुई। मुख्य अतिथि राजेश अग्रवाल ने अपने प्रेरक संबोधन में कहा कि 'वंदे मातरम् केवल एक गीत नहीं, बल्कि यह हमारी राष्ट्रभक्ति, मातृभूमि के प्रति समर्पण और एकता का प्रतीक है। जब पूरा समाज एक स्वर में इस गीत को गाता है, तब भारत की आत्मा बोल उठती है। आज का यह आयोजन सरगुजा की राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक गौरव का उत्कृष्ट उदाहरण है। '

प्रदेश महामंत्री अखिलेश सोनी ने अपने उद्बोधन में कहा कि 'भारतीय जनता पार्टी सदैव राष्ट्रवाद, संस्कृति और समाज की एकता के भाव को सर्वोपरि मानती है। वंदे मातरम् हमारे आत्मसम्मान का प्रतीक है, जिसने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान करोड़ों भारतीयों में देशप्रेम की ज्वाला जगाई थी। आज पुनः उसी भावना को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य भाजपा के कार्यकर्ता पूरे समर्पण भाव से कर रहे हैं। ' उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन राष्ट्र के प्रति श्रद्धा, अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा की भावना को और प्रबल बनाते हैं। भाजपा जिलाध्यक्ष भारत सिंह सिसोदिया ने सभी कार्यकर्ताओं, जनप्रतिनिधियों,विद्यार्थियों एवं नागरिकों से 'वंदे मातरम्' के सामूहिक गायन में अधिकाधिक संख्या में भाग लेने का आह्वान किया था। उनके इस प्रेरक आह्वान पर सैकड़ों नागरिकों ने उत्साह और श्रद्धा के साथ सामूहिक रूप से 'वंदे मातरम्' गाया, जिससे पूरा सभागार राष्ट्रप्रेम और एकता के भाव से सराबोर हो उठा। कार्यक्रम में देशभक्ति गीतों की शानदार प्रस्तुति संजय सुरीला टीम द्वारा दी गई। 'भारत माता की जय' और 'वंदे मातरम्' के नारों से ऑडिटोरियम गूंज उठा। वंदे मातरम् गीत गायन में हिमांगी त्रिपाठी ग्रुप सहित उपस्थित सभी जनों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के समापन अवसर पर राजेश अग्रवाल ने 'आत्मनिर्भर भारत स्वदेशी संकल्प पत्र' का वाचन किया तथा उपस्थित जनों ने स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग का संकल्प लिया। कार्यक्रम का संचालन जिला महामंत्री विनोद हर्ष ने किया।

इस अवसर पर वरिष्ठ भाजपा नेता अनिल सिंह मेजर, ललन प्रताप सिंह, कमलभान सिंह, अम्बिकेश केशरी, हरपाल सिंह भामरा, हरमिंदर सिंह टिन्नी, अरुणा सिंह, देवनारायण यादव, करताराम गुप्ता, अनिल अग्रवाल, मधुसूदन शुक्ला, विकास पांडेय, मधु चौदाहा, फुलेश्वरी सिंह, निलेश सिंह, संतोष दास, रूपेश दुबे, कमलेश तिवारी, मनोज कंसारी, मनोज गुप्ता सहित पार्षदगण, भाजपा पदाधिकारी-कार्यकर्ता, प्रशासनिक अधिकारी-कर्मचारी, स्कूली छात्र-छात्राएँ एवं गणमान्य नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

न्यायालय भवन का विस्थापन रोको नवीन न्यायालय भवन यही बनाओ

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,07 नवम्बर 2025 (घटती-घटना)।

जिला अधिवक्ता संघ, सरगुजा (अंबिकापुर) की संघर्ष समिति द्वारा लिए गए सर्वसम्मत निर्णय के अनुसार आज दिनांक 07 नवम्बर 2025 से संघ से पंजीकृत सभी अधिवक्ता गण अनिश्चितकालीन कार्य बहिष्कार पर चले गए हैं। यह निर्णय न्यायालय भवन को वर्तमान स्थल पर ही निर्मित किए जाने की जनभावना और अधिवक्ता समुदाय की दीर्घकालिक मांग को लेकर लिया गया है। संघ द्वारा आयोजित इस आंदोलन को आज सरगुजा की विभिन्न सामाजिक, धार्मिक,राजनीतिक एवं शासकीय संगठनों का अभूतपूर्व समर्थन प्राप्त हुआ। आंदोलन स्थल पर पहुँचकर कैबिनेट मंत्री, छत्तीसगढ़ शासन श्री राजेश अग्रवाल, पूर्व उपमुख्यमंत्री श्री टी.एस. सिंहदेव, गुरु सिंह सभा अंबिकापुर,सर्व ब्राह्मण सभा सरगुजा, कर्मचारी अधिकारी फेडरेशन तथा आम आदमी पार्टी के प्रतिनिधियों एवं उपस्थित पक्षकारों ने मंच से अधिवक्ताओं की मांगों का पूर्ण समर्थन करते हुए कहा कि 'न्यायालय भवन को वर्तमान स्थल पर ही बनाना न्यायिक दृष्टि से भी उचित है तथा यह अंबिकापुर की जनता की भावनाओं के अनुरूप निर्णय होगा। 'नेताओं एवं संगठनों के प्रतिनिधियों ने अधिवक्ताओं की एकजुटता और जनहित में उनके संघर्ष की सराहना की। उन्होंने यह भी कहा कि अधिवक्ता वर्ग समाज का बौद्धिक मार्गदर्शक है और जब न्याय के प्रहरी स्वयं सड़क पर उतरते हैं, तो यह संकेत होता है कि प्रशासन को अपनी नीति और निर्णयों पर पुनर्विचार करना चाहिए। आंदोलन स्थल पर पूरे दिन उत्साह,अनुशासन और एकता का अद्भुत प्रदर्शन देखने को मिला। भारी संख्या में अधिवक्ता एवं आमजन आंदोलन में शामिल हुए और 'न्यायालय भवन वर्तमान स्थल पर ही बनेगा' के नारों से संपूर्ण परिसर गूंज उठा। अधिवक्ताओं ने यह स्पष्ट किया कि यह आंदोलन किसी व्यक्ति या संस्था के विरोध में नहीं, बल्कि जनसुविधा, पारदर्शिता और न्यायिक गरिमा की रक्षा हेतु है। संघ के अध्यक्ष अनिल सोनी ने बताया कि जिला न्यायालय का वर्तमान स्थान वर्षों से न्यायिक कार्यप्रणाली के लिए उपयुक्त सिद्ध हुआ है। यहाँ अधिवक्ताओं,आम नागरिकों एवं न्यायालयीन कर्मचारियों के लिए सभी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हैं। अतः भवन के स्थानांतरण का प्रस्ताव जनविरोधी,अव्यावहारिक और न्यायिक दृष्टि से प्रतिकूल है। संघ की संघर्ष समिति ने यह भी घोषणा की है कि जब तक शासन-प्रशासन द्वारा न्यायालय भवन को वर्तमान स्थल पर ही निर्मित किए जाने संबंधी लिखित एवं औपचारिक निर्णय नहीं लिया जाता, तब तक अधिवक्ता समुदाय अनिश्चितकाल तक न्यायिक कार्य से विरत रहेगा।

राष्ट्रगीत, वन्दे मातरम की गूंज से गुंजायमान हो उठा महाविद्यालय परिसर

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,07 नवम्बर 2025 (घटती-घटना)।

होली क्रॉस वीमेंस कॉलेज अंबिकापुर में राष्ट्रगीत 'वन्देमातरम 'की 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित राष्ट्रीय कार्यक्रम में उपप्राचार्य डॉ सिस्टर मंजू टोप्पो समेत संपूर्ण स्टाफ व छात्राएं सम्मिलित हुईं, व सभी के द्वारा राष्ट्रगीत वन्देमातरम का सामूहिक गान किया गया। राष्ट्रगीत के सामूहिक गान ने सबके हृदय को देशभक्ति की भावना से भर दिया, डॉ कल्पना गुहा डीन समाज विज्ञान संकाय(गतिविधि) ने राष्ट्रगीत के गौरवशाली इतिहास की जानकारी दी। कार्यक्रम के अंत में उपप्राचार्य महोदया ने इस शुभ अवसर पर विचाराभिव्यक्ति करते हुए कहा कि,भारतीयों के लिए यह सिर्फ गीत नहीं ,किंतु भारत मां का वंदन है।

ग्राम पंचायत कृष्णनगर में 'वंदे मातरम् स्मरणोत्सव' का भव्य आयोजन, देशभक्ति से सराबोर हुआ माहौल

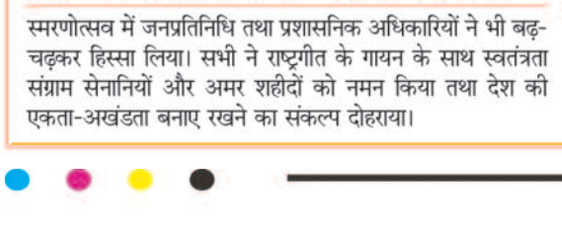

-संवाददाता-
कुसमी/बलरामपुर,07 नवम्बर 2025 (घटती-घटना)।

शंकरगढ़ विकासखंड के ग्राम पंचायत कृष्णनगर में भी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर देशभर की शुक्रवार को राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् के 150 गौरवशाली वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में वंदे मातरम् स्मरणोत्सव बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया गया। जिला प्रशासन से लेकर गांव-गांव तक इस आयोजन की देशभक्ति की भावना स्पष्ट रूप से देखने को मिली। इसी कड़ी में ग्राम पंचायत कृष्णनगर में भी स्मरणोत्सव का आयोजन अत्यंत हर्षोल्लास के साथ किया गया,जिसमें स्थानीय जनप्रतिनिधि,अधिकारी-कर्मचारी, शिक्षक, विद्यार्थी एवं बड़ी संख्या में ग्रामीण शामिल हुए। सभी ने एक स्वर में 'वंदे मातरम्' का सामूहिक गायन कर राष्ट्रमाता के प्रति अपनी आस्था और समर्पण व्यक्त किया।

एकता और राष्ट्रप्रेम की भावना को मिला बल

जिलेभर के शासकीय-अशासकीय कार्यालयों,विद्यालयों,पंचायत भवनों,नगरीय निकायों एवं सामाजिक संस्थाओं में विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए। कृष्णनगर सहित विभिन्न पंचायतों में लोगों ने राष्ट्रगीत के माध्यम से देश की अखंडता और राष्ट्रीय स्वाभिमान को मजबूत करने का संदेश दिया।

जनप्रतिनिधि एवं अधिकारियों की सक्रिय सहभागिता

स्मरणोत्सव में जनप्रतिनिधि तथा प्रशासनिक अधिकारियों ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। सभी ने राष्ट्रगीत के गायन के साथ स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों और अमर शहीदों को नमन किया तथा देश की एकता-अखंडता बनाए रखने का संकल्प दोहराया।

वंदे मातरम् की 150वीं वर्षगांठ पर सभी ग्राम पंचायतों में किया गया रोजगार दिवस का आयोजन

-संवाददाता-
बलरामपुर,07 नवम्बर 2025 (घटती-घटना)।

कलेक्टर राजेन्द्र कटारा के निर्देशन एवं जिला पंचायत सीईओ श्रीमती नयनतारा सिंह तोमर के मार्गदर्शन में वंदे मातरम् की 150 वीं वर्षगांठ के अवसर पर जिले के सभी ग्राम पंचायतों में रोजगार दिवस मनाया गया। जिसके अन्तर्गत सभी 476 ग्राम पंचायतों में महात्मा गांधी नरेगा योजना अंतर्गत रोजगार दिवस का आयोजन कर ई-केवाईसी, प्रधानमंत्री आवास के संबंध में जानकारी दी गई।

सभी ग्राम पंचायतों में महात्मा गांधी नरेगा श्रमिकों के द्वारा वंदे मातरम् की 150वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के लाइव प्रसारण का सामूहिक श्रवण किया गया। श्रमिकों ने देशभक्ति के माहौल में एकजुट होकर सामूहिक रूप से ''वंदे मातरम्'' का गायन भी किया। साथ ही रोजगार दिवस के अवसर पर श्रमिकों को ई-केवाईसी कराने के महत्व की जानकारी दी गई तथा उन्हें शीघ्र ई-केवाईसी पूर्ण कराने हेतु प्रेरित किया गया। इस दौरान श्रमिकों को महात्मा गांधी नरेगा योजना का मुख्य उद्देश्य तथा प्रावधानों एवं अधिकारों के प्रति श्रमिकों को जागरूक किया गया। साथ ही साथ नरेगा श्रमिक जिनका प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के अन्तर्गत आवास स्वीकृत है उन सभी श्रमिकों को अतिशीघ्र आवास निर्माण कार्य प्रारंभ कर निर्धारित समयावधि में पूर्ण करने के निर्देश भी दिये गये है। रोजगार दिवस के आयोजन में तकनीकी सहायक, सचिव, ग्राम रोजगार सहायक, मेट, बीएफटी, सरपंच,पंच एवं श्रमिक उपस्थित रहे।

अपहरण काण्ड में फिरौती की मांग करने में शामिल फरार एक और आरोपी को भेजा सलाखों के पीछे

-संवाददाता-
बसंतपुर,07 नवम्बर 2025 (घटती-घटना)।

बलरामपुर जिले के बसंतपुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत अपहरण कर फिरौती मांगने के मामले में पूर्व में संलिप्त 04 अन्य आरोपियों को बसंतपुर पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका है। उक्त मामले में फरार चल रहे एक और आरोपी को रिमांड में लेकर पूछताछ में आरोपी के द्वारा अपना जुल्म स्वीकार करने पर पुलिस ने आरोपी पर अपराध क्रमांक 150/2025 धारा 140 (1),58,61,127 (7).3 (5) बीएनएस के तहत अपराध पंजीबद्ध कर भेजा सलाखों के पीछे। जानकारी के अनुसार दिनांक 08.08.2025 को प्रार्थी बृजेश सिंह पिता राम सिंगार जाति गोंड़ उम्र 22 वर्ष निवासी ग्राम रजखेता पुलिस चौकी वाड्रफनगर थाना बसंतपुर द्वारा थाना बसंतपुर में उपस्थित होकर लिखित आवेदन पत्र पेश कर रिपोर्ट दर्ज कराया गया था कि दिनांक 07.08.2025 को सुबह करीब 10.00 बजे प्रार्थी का भाई विजयलाल मरकाम अपने मोबाईल नंबर से प्रार्थी को फोन किया और बतया कि इसके साथ तीन लोग हैं तभी विजयलाल मरकाम का मोबाईल लेकर एक व्यक्ति प्रार्थी को बोला कि 3,00000/- रू.

(तीन लाख रूपये) शाम तक लेकर आओ नहीं तो तुम्हारा भाई को नही छोड़ेंगे कहकर फोन काट दिया। दिनांक 08.08.2025 को सुबह करीब 09.00 बजे फिर से फोन कर के 3,00000/- रू. (तीन लाख रूपये) मांग कर रहा है, प्रार्थी का भाई विजय लाल मरकाम दिनांक 06.08.2025 से घर नही आया है। अज्ञात व्यक्ति द्वारा पैसे की मांग के लिये अपहरण किया गया है। प्रार्थी के रिपोर्ट पर थाना बसंतपुर में अज्ञात आरोपी के विरूद्ध सदर धारा-140 (1) बी.एन. एस. का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया था। पुलिस ने विवेचना के दौरान पूर्व में कुल 04 आरोपी (01) सद्दाम अंसारी पिता सगिर अंसारी उम्र 34 वर्ष (02) रोहीत कुमार चौरसिया पिता स्व. शम्भु चौरसिया उम्र 26 वर्ष दोनो निवासी बीजपुर बाजार पारा थाना बीजपुर जिला सोनभद्र (उत्तर प्रदेश) (3) सतीष कुमार गुप्ता पिता भोलानाथ गुप्ता उम्र 39 वर्ष निवास बीजपुर थाना बिजपुर जिला सोनभद (उत्तर प्रदेश) (4) अखिलेश उर्फ पंकज मिश्र पिता प्रेमनरेश मिश्रा उम्र 36 वर्ष निवासी बीजपुर मार्केट थाना बिजपुर जिला सोनभद्र (उत्तर प्रदेश) को विधिवत न्यायिक रिमांड पर भेजा गया है।

रिमांड में लेकर पूछताछ करने पर आरोपी ने कबूला स च: मामले का एक अन्य आरोपी राकेश उर्फ बिल्लू यादव पिता अनिल यादव निवासी प्रेमनगर घटना दिनांक से घटना के बाद से लगातार फरार चल रहा था। आरोपी राकेश उर्फ बिल्लू यादव के द्वारा दिनांक 06/11/2025 को माननीय न्यायालय वाड्रफनगर के समक्ष आत्मसम्पर्ण किया गया है, आरोपी को पुलिस रिमाण्ड में लेकर पुछताछ करने पर अपना जूर्म स्वीकार किया एवं घटना मे प्रयुक्त बाईक जप्त किया गया है आरोपी को विधिवत न्यायिक रिमाण्ड पर भेजा गया है।

अजय चंद्राकर पर भड़के टीएस सिंहदेव,एफआईआर करवाता लेकिन मित्रवत व्यवहार ने रोक रखा है...

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,07 नवम्बर 2025 (घटती-घटना)।

टीएस सिंहदेव ने कांग्रेस टैलेंट के साथ ही अजय चंद्रकार के बयान और अमित बघेल के छत्तीसगढ़ियावाद को लेकर बड़ा बयान दिया है। पूर्व उपमुख्यमंत्री टीएस सिंह देव ने अजय चंद्राकर को लेकर भी बड़ा बयान दिया है। टीएस सिंहदेव ने कहा की कभी–कभी लगता है अजय चंद्राकर के खिलाफ एफआईआर दर्ज करा दूं, लेकिन उनसे मित्रवत व्यवहार है, मगर इतनी हल्की बयानबाजी नहीं करनी चाहिए। अजय चंद्राकार ने टीएस सिंह देव के पास लाइसेंसी बंदूक वाले बयान पर प्रतिक्रिया दी है। इसके साथ ही कांग्रेस के टैलेंट हंट अभियान को लेकर टीएस सिंहदेव ने कहा है कि जो तर्कपूर्ण बातों को लेकर जुड़ना चाहते हैं उनके लिए यह अभियान एक बेहतर अवसर है। जो युवा जुड़ना चाहते हैं उनके जोड़ने का अभियान

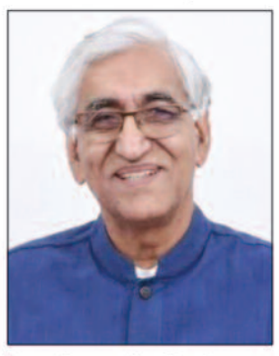

है। इसके साथ ही छत्तीसगढ़ियावाद को लेकर टीएस सिंहदेव ने कहा कि छत्तीसगढ़ियावाद का कोई भी जनक हो, लेकिन जो भी देश के कानून के तहत आकर रह रहे हैं उन्हें यहां रहने का पूर्ण अधिकार है। यहां के लोगों का शोषण हो रहा हो तो बात अलग है,जो यहाँ आकर रह गया वो छत्तीसगढ़िया हो गया। उन्होंने ये सवाल भी किया कि अमित बघेल के पूर्वज कितने साल पहले यहां आए,कुछ तो बुद्धि पूर्वक बातें करें।

पेट्रोल-डीजल चोरी का आरोप लगाकर दो युवकों की कूरतापूर्वक पिटाई,वीडियो वायरल

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,07 नवम्बर 2025 (घटती-घटना)।

बलरामपुर जिले के बरियो चौकी क्षेत्र के ग्राम भेलाई खुर्द में पेट्रोल-डीजल चोरी के शक पर क्रशर संचालकों ने दो युवकों को कूतापूर्वक हाथ-पैर बांधकर व कपड़े उतरवाकर मारपीट करने का मामला सामने आया है। मारपीट किए जाने का वीडिया सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वायरल वीडियो में एक युवक अर्धनग्न अवस्था में दोनों हाथ व पैर को एक पाइप के सहारे रस्सी से बांधकर उसे लात से कुछ लोगों द्वारा पीटा जा रहा है। युवक जमीन पर गिरा पड़ा है। क्यों कि उसके दोनों हाथ व पैर बंधे हुए हैं। वहीं एक युवक अर्धनग्न अवस्था में है। उसके साथ लोग पूछताछ कर रहे हैं। बताया जा रहा है कि दोनों युवक पोकलेन का ऑपरेटर हैं और क्रशर संचालक और उसके साथी पेट्रोल-डीजल चोरी करने का आरोप लगाकर क्रूरता पूर्वक मारपीट कर रहे हैं। मारपीट का वीडियो सोशल मीडिया में वायरल हो गया। बरियो चौकी प्रभारी रविन्द्र प्रताप सिंह ने बताया कि जिस युवक को पीटा गया है, उसकी शिनाख्त कर ली गई है।

साइबर फ्राड व ऑनलाइन ठगी से बचने के उपाय बताए,बोले...सजगता ही सुरक्षा है...

साइबर फ्राड पीड़ित ने खुद के साथ हुए फ्राड से कराया अवगत,सावधानी बरतने दी समझाईश

-संवाददाता-
सूरजपुर,07 नवम्बर 2025 (घटती-घटना)।

साइबर अपराधों पर अंकुश लगाने एवं बचाव के उपाय से अवगत कराने के लिए सूरजपुर पुलिस ने साइबर सुरक्षा संवाद कार्यक्रम के तहत गुरुवार, 06 नवम्बर 2025 को जरही के मनोरंजन गृह में साइबर जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें डीआईजी व एसएसपी सूरजपुर श्री प्रशांत कुमार ठाकुर, जीएम भटगांव श्री माधव बोबडे, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती चंद्रमणि पैकरा, मंत्री प्रतिनिधि श्री ठाकुर प्रसाद राजवाड़े ने साइबर फ्राड से बचाव के उपाए बताए तो वहीं साइबर फ्राड के पीड़ितों ने भी अपनी आपबीती शेयर कर लोगों को साइबर ठग के झांसे में न आने के लिए जागरूक किया। इस अवसर पर डीआईजी व एसएसपी सूरजपुर श्री प्रशांत कुमार ठाकुर ने

कहा कि साइबर अपराध से बचाव का सबसे बड़ा जरिया सतर्कता और सावधानी है, आप समझे कि आपको फोन पर लोन दिलाने या लाटरी लगने के नाम पर फोन कर कोई व्यक्ति पैसा मांगता है तो वह साइबर फ्राड है, ऐसी किसी भी जाल में न फंसे। साइबर अपराधी आजकल फोन कॉल, ईमेल, व्हाट्सएप, सोशल मीडिया और फर्जी लिंक के माध्यम से लोगों की बैंक डिटेल्स, ओटीपी या निजी जानकारी हासिल कर ठगी करते हैं इनसे बचे। उन्होंने बैंक खाते या एटीएम से जुड़ी जानकारी किसी के साथ साझा न करने और संदिग्ध कॉल या मैसेज की शिकायत तुरंत पुलिस या साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 पर करने को कहा।

मामा-भांजा की सड़क हादसे में दर्दनाक मौत,दो युवक गंभीर घायल,घंटों तक जाम रहा नेशनल हाइवे-43...

-संवाददाता-
सूरजपुर,07 नवम्बर 2025 (घटती-घटना)।
जिले के कोतवाली थाना क्षेत्र के कमलपुर कोटमी गांव के पास शुक्रवार सुबह नेशनल हाइवे-43 पर एक दिल दहला देने वाला हादसा हुआ। दो ट्रकों की आमने-सामने जोरदार भिड़ंत में मामा-भांजा की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे के बाद सड़क पर घंटों जाम लगा रहा और अफरा-तफरी का माहौल बन गया। जानकारी के अनुसार, ट्रक क्रमांक CG10BP 8290 अंबिकापुर से महेंद्रगढ़ की ओर जा रहा था, जिसमें टीएमटी सरिया लोड था। वहीं सामने से आ रहा दूसरा ट्रक क्रमांक HP 24 D 8850 सतना से गेहूं लेकर उड़ीसा की ओर जा रहा था। कोटमी गांव के पास दोनों ट्रक आमने-सामने इतनी तेज रफ्तार में भिड़ गए कि दोनों गाड़ियाँ आपस में बुरी तरह चिपक गईं।

टक्कर इतनी भीषण थी कि एक ट्रक के परखच्चे उड़ गए और उसमें सवार मुन्ना लाल यादव (42 वर्ष, ड्राइवर) व विपिन यादव (18 वर्ष, क्लीनर) की मौके पर ही मौत हो गई। दोनों मामा-भांजा बताए जा रहे हैं और मऊगंज, जिला रीवा (मध्य प्रदेश) के रहने वाले थे। दूसरे ट्रक में सवार अनूप पटेल (उम्र 23 वर्ष) और अनूपम महारा (उम्र 21 वर्ष) दोनों निवासी बभनी, जिला अनूपपुर (मध्य प्रदेश) गंभीर रूप से घायल हुए। आसपास के लोगों ने तत्काल पुलिस को सूचना दी, जिसके बाद कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और ग्रामीणों की मदद से जेसीबी व कटर की सहायता से घंटों की मशक्कत के बाद शवों को बाहर निकाला गया। घायलों को 108 एम्बुलेंस की मदद से जिला अस्पताल सूरजपुर भेजा गया, जहां उनका इलाज जारी है। डॉक्टरों के अनुसार दोनों की हालत फिलहाल स्थिर है। हादसे के बाद नेशनल हाइवे-43 पर वाहनों की लंबी कतार लग गई थी।

पुलिस ने मौके पर पहुंचकर ट्रैफिक को डायवर्ट किया और करीब दो घंटे बाद सड़क को फिर से चालू कराया वहीं अब पुलिस पूरे मामले की जांच शुरू कर दी है। नगर निरीक्षक विमलेश दुबे यातायात प्रभारी बृज किशोर पांडेय अपने दल बल के साथ मौके पर सक्रिय रहे।

राजस्व विभाग की सलिप्ता से पुनर्वास की भूमि पर दबंगो का कब्जा

दबंगों ने बैंकों से ऋण लेकर शासन की योजनाओं का लाभ उठा रहे हैं

भूमि स्वामी ने आयुक्त,कलेक्टर,एसपी से ज्ञापन देकर की शिकायत

-संवाददाता-
बलरामपुर,07 नवम्बर 2025 (घटती-घटना)।
जानकारी के अनुसार बलरामपुर जिले के रामानुजगंज राजस्व विभाग के अंतर्गत आने वाले ग्राम नेहरू नगर निवासी गोपाल हलदार ने सरगुजा आयुक्त,पुलिस महानिरीक्षक, बलरामपुर कलेक्टर,एसपी,एसडीएम,थाना,तहसील कार्यालय को ज्ञापन सौंपकर कहा कि राजस्व विभाग के अधिकारी-कर्मचारियों की संलिप्तता से पुनर्वास की भूमि को दबंगो ने अपने नाम नामांतरण कराकर बैंक से ऋण लेकर शासन की योजनाओं का लाभ उठा रहे हैं। प्राथी गोपाल हलदार ने ज्ञापन सौंपकर कहा कि ग्राम नेहरू नगर स्थित खसरा नम्बर 175 रकबा 2.02 हेक्टेयर की भूमि पटवारी हल्का नम्बर 41 राजस्व निरीक्षक मंडल तहसील रामानुजगंज के अंतर्गत आता है उक्त भूमि राजस्व अभिलेख में भगतचंद पुत्र सुखचंद के नाम पर शासन के पुनर्वास योजना के तहत दर्ज था। भगतचंद पिता सुखचद बांग्लादेशी नागरिक था, जिसे भारत सरकार ?द्वारा बांग्लादेशी पुनर्वास योजना 1971 के अंतर्गत उक्त भूमि खसरा नम्बर 175 रकबा 2.0200 हेक्टेयर का पट्टा शासन द्वारा पनर्वास योजना के तहत प्रदान किया गया था। कुछ ही समय पश्चात भगतचंद अपने परिवार सहित पुनः बांग्लादेश

लौट गया और फिर कभी भारत वापस नहीं आया। भगतचंद के देश वापस चले जाने के बाद उक्त पुर्नवास भूमि को फर्जी तरीके से हल्का पटवारी एवं अन्य राजस्व अधिकारियों की मिलीभगत से ग्राम नेहरू नगर रामानुजंगज निवासी 42 वर्षीय बसंती पति परितोष हलदार, 45 वर्षीय परितोष हलदार पिता खोखन हलदार, 23 वर्षीय अनुप हलदार पिता परितोष हलदार, 25 वर्षीय उत्तम हलदार पिता परितोष हलदार व 35 वर्षीय सत्तो मंडल पिता चारू मंडल ने बसंती पति परितोष हलदार के नाम पर 2022 में दर्ज करा लिया और बसंती द्वारा उक्त भूमि पर अपने नाम पर बैंक से ऋण लेकर शासन की विभिन्न योजनाओं का लाभ उठाया जा रहा है। ज्ञात हो कि भूमि अधिग्रहण पुनर्वास और पुनर्स्थापन में पारदर्शिता का अधिकार अधिनियम 2013' के प्रावधानों के अनुसार जब कोई व्यक्ति पुनर्वासित भूमि छोड़कर वापस अपने देश वापस चला जाता है तो वह भूमि सरकार की संपत्ति बन जाती है तथा सरकार को उसका पुनः आवंटन करने का अधिकार होता है या अन्य शासन की परियोजना हेतु भूमि को रिर्जव रखा जाता है। उक्त परिस्थिति में यदि कोई व्यक्ति पुनर्वास भूमि को फर्जी तरीके से अपने नाम दर्ज कराकर निजी लाभ लेता है तो यह कृत्य गंभीर अपराध की श्रेणी में आता है।

ज्ञापन कर्ता ने निष्पक्ष जांच कर दोषियों पर कार्यवाही करने की मांग की

ज्ञापन कर्ता गोपाल जलदार ने उक्त पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कराते हुए दोषी व्यक्तियों के विरुद्ध वैधानिक कार्यवाही करते हुए केस दर्ज कराने की मांग की है। उक्त मामले में कलेक्टर राजेंद्र कुमार कटारा ने कहा कि शिकायत मिली है जांच कराई जाएगी जांच उपरांत गलत पाए जाने पर कार्रवाई की जाएगी।

कश्मीर के नज़ाकत अली का नज़मियां मस्जिद रसूलपुर में सम्मान,इंसानियत और भाईचारे की मिसाल

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,07 नवम्बर 2025 (घटती-घटना)।
आज जुम्मे की नमाज़ के बाद नज़मियां मस्जिद,रसूलपुर अम्बिकापुर में कश्मीर के जांबाज़ नौजवान श्री नज़ाकत अली का भावपूर्ण सम्मान किया गया। ज्ञात हो कि नज़ाकत अली ने हाल ही में पहलगाम (जम्मू-कश्मीर) में हुए आतंकी हमले के दौरान छत्तीसगढ़ के चार परिवारों...अरविंद अग्रवाल परिवार,कुलदीप स्थापक परिवार, शिवांश जैन परिवार और हैप्पी वाधावन परिवार के लगभग 11 लोगों की जान बचाकर इंसानियत की अनोखी मिसाल पेश की थी। कार्यक्रम की अध्यक्षता मौलाना सगीर अहमद मिस्बाही (इमाम मस्जिद नज़मिया) ने की। इस अवसर पर मुतवल्ली जनाब जिलानी खान,अध्यक्ष श्री रशीद अहमद अंसारी,सचिव हाजी आरिफ़ खान साहब तथा मस्जिद में मौजूद सैकड़ों नमाज़ियों और स्थानीय नागरिकों ने नज़ाकत अली का शानदार सम्मान किया गया। सभी वक्ताओं ने कहा कि नज़ाकत अली का यह कार्य कश्मीरियत, इंसानियत और हिंदुस्तानियत की असली तस्वीर पेश करता है। उन्होंने अपनी जान

जोखिम में डालकर छत्तीसगढ़ के परिवारों को सुरक्षित बाहर निकालकर यह साबित किया कि मजहब से बढ़कर इंसानियत है। कार्यक्रम के अंत में मुल्क में अमन-चैन, भाईचारा और नज़ाकत अली की सलामती के लिए विशेष दुआ की गई।

व्यापार समाचार

स्टॉक मार्केट में स्टड्स की फीकी एंट्री कमजोर लिस्टिंग के बाद हुई बिकवाली से नुकसान में आईपीओ निवेशक

नई दिल्ली,07 नवम्बर 2025। हेलमेट बनाने वाली कंपनी स्टड्स एसेसरीज के शेयरों ने आज स्टॉक मार्केट में फीकी एंट्री करके अपने आईपीओ निवेशकों को निराश कर दिया। आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 585 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे। आज बीएसई पर इसकी लिस्टिंग करीब 3 प्रतिशत डिस्काउंट के साथ 570 रुपये के स्तर पर और एनएसई पर 565 रुपये के स्तर पर हुई। कमजोर लिस्टिंग के बाद मामूली लिवाली के सपोर्ट से ये शेयर उछल कर कुछ देर के लिए अपने इश्यू प्राइस यानी 585 रुपये तक पहुंचने में सफल रहा,लेकिन इसके बाद बिकवाली शुरू हो जाने की वजह से इसकी चाल में गिरावट आ गई। पूरे दिन के कारोबार के बाद स्टड्स एसेसरीज के शेयर बीएसई पर 560.45 रुपये और एनएसई पर 560.30 रुपये के स्तर पर बंद हुआ। इस तरह पहले दिन के कारोबार में ही कंपनी के आईपीओ निवेशकों को 4.2 प्रतिशत का नुकसान हो गया। स्टड्स एसेसीरीज का 455.49 करोड़ रुपये का आईपीओ 30 अक्टूबर से 3 नवंबर के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था। इस आईपीओ को निवेशकों की ओर से शानदार रिस्पॉन्स मिला था, जिसके कारण ये ओवरऑल 73.25 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इनमें क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) के लिए रिजर्व पोर्शन 159.99 गुना सब्सक्राइब हुआ था। नॉन इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स (एनआईआई) के लिए रिजर्व पोर्शन में 76.99 गुना सब्सक्रिप्शन आया था। इसी तरह रिटेल इन्वेस्टर्स के लिए रिजर्व पोर्शन 22.08 गुना सब्सक्राइब हो सका था। इस आईपीओ के तहत 5 रुपये फेस वैल्यू वाले 77,86,120 शेयर ऑफर फॉर सेल विंडो के जरिये जारी किए गए हैं। कंपनी की वित्तीय स्थिति की बात करें, तो कैपिटल मार्केट रेगुलेटर सेबी के पास जमा कराए गए ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) में किए गए दावे के मुताबिक इसकी वित्तीय सेहत लगातार मजबूत हुई है। वित्त वर्ष 2022-23 में कंपनी को 33.15 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ था, जो अगले वित्त वर्ष 2023-24 में बढ़ कर 57.23 करोड़

रुपये और 2024-25 में उछल कर 69.64 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। इस दौरान कंपनी का राजस्व 11 प्रतिशत वार्षिक से अधिक की चक्रवृद्धि दर (कंपाउंड एनुअल ग्रोथ रेट) से बढ़ कर 595.89 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। मौजूदा वित्त वर्ष 2025-26 की बात करें, तो पहली तिमाही यानी अप्रैल से जून, 2025 में कंपनी को 20.25 करोड़ रुपये का शुद्ध मुनाफा हो चुका है। इसी तरह इस अवधि में कंपनी को 152.01 करोड़ रुपये का राजस्व हासिल हो चुका है। इस दौरान कंपनी पर लदे कर्ज के बोझ में उतार-चढ़ाव होता रहा। वित्त वर्ष 2022-23 के आखिर में कंपनी का कर्ज 30.58 करोड़ रुपये, जो वित्त वर्ष 2023-24 के आखिर में कम होकर 61 लाख रुपये हो गया। हालांकि तरह वित्त वर्ष 2024-25 के आखिर में कंपनी का कर्ज बढ़ कर 2.91 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। मौजूदा वित्त वर्ष 2025-26 की पहली तिमाही यानी अप्रैल से जून 2025 में कंपनी पर कर्ज का बोझ 2.91 करोड़ रुपये के स्तर पर ही है। इस अवधि में कंपनी के रिजर्व और सरप्लस की बात करें, तो वित्त वर्ष 2022-23 के आखिरी में ये 328.18 करोड़ रुपये के स्तर पर था, जो वित्त वर्ष 2023-24 के आखिरी में बढ़ कर 377.57 करोड़ रुपये और वित्त वर्ष 2024-25 के आखिरी में उछल कर 429.80 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया।

लाल निशान पर बंद हुआ शेयर बाजार सेंसेक्स 95 अंक टूटा,निफ्टी 25500 के नीचे

नई दिल्ली,07 नवम्बर 2025। सप्ताह के आखिरी कारोबारी दिन शुक्रवार को घरेलू शेयर बाजार में निचले स्तर से जबरदस्त रिकवरी देखी गई। शुक्रवार को कारोबार की शुरुआत कमजोरी के साथ हुई थी। बाजार खुलने के बाद बिकवाली के दबाव की वजह से शेयर बाजार तेज गिरावट का शिकार हो गया। लेकिन सुबह 10 बजे के बाद खरीदारों ने लिवाली शुरू कर दी, जिससे धीरे-धीरे सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांकों ने रिकवरी शुरू कर दी। खरीदारी के सपोर्ट से दोपहर 2 बजे के थोड़ी देर पहले ये दोनों सूचकांक हरे निशान में अपनी जगह बनाने में सफल रहे। हालांकि आखिरी घंटे के कारोबार में एक बार फिर मुनाफा वसूली शुरू हो जाने के कारण ये दोनों सूचकांक गिर कर लाल निशान में आ गए। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.11 प्रतिशत और निफ्टी 0.07 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुए।

शुक्रवार को दिनभर के कारोबार के दौरान कैपिटल मार्केट और मेटल सेक्टर के शेयरों में जमकर खरीदारी हुई। इसी तरह पीएसयू बैंक, पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइज, ऑटोमोबाइल और ऑयल एंड गैस इंडेक्स भी बढ़त के साथ बंद होने में सफल रहे। दूसरी ओर, इंफ्रास्ट्रक्चर, आईटी और एफएमसीजी सेक्टर के शेयरों में लगातार बिकवाली होती रही। इसी तरह कैपिटल गुड्स, कंज्यूमर ड्यूरेबल, हेल्थ केयर और टेक इंडेक्स भी गिरावट के साथ बंद हुए। ब्रॉडर मार्केट में शुक्रवार को मिला-जुला कारोबार होता रहा, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.25 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुआ। इसके विपरीत स्मॉलकैप इंडेक्स ने 0.01 प्रतिशत की सांकेतिक कमजोरी के साथ शुक्रवार को कारोबार का

अंत किया। शुक्रवार को शेयर बाजार में आई कमजोरी के बावजूद स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में 50 हजार करोड़ रुपये से अधिक की बढ़ोतरी हो गई। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन शुक्रवार को कारोबार के बाद बढ़ कर 466.35 लाख करोड़ रुपये (अनंतिम) हो गया। जबकि पिछले कारोबारी दिन यानी गुरुवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 465.83 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह निवेशकों को शुक्रवार को कारोबार से करीब 52 हजार करोड़ रुपये का मुनाफा हो गया। शुक्रवार को दिनभर के कारोबार में बीएसई में 4,315 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें 2,065 शेयर बढ़त के साथ बंद हुए, जबकि 2,105 शेयरों में गिरावट का रुख रहा, वहीं 145 शेयर बिना किसी उतार-चढ़ाव के बंद हुए। एनएसई में शुक्रवार को 2,830 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें से 1,407 शेयर मुनाफा कमा कर हरे निशान में और 1,423 शेयर नुकसान उठा कर लाल निशान में बंद हुए। इसी तरह सेंसेक्स में शामिल 30 शेयरों में से 14 शेयर बढ़त के साथ और 16 शेयर गिरावट के साथ बंद हुए। जबकि निफ्टी में शामिल 50 शेयरों में से 29 शेयर हरे निशान में और 21 शेयर लाल निशान में बंद हुए। बीएसई का सेंसेक्स शुक्रवार को 160.86 अंक की कमजोरी के साथ 83,150.15 अंक के स्तर पर खुला। कारोबार की शुरुआत होने के बाद बिकवाली का दबाव बन गया, जिसकी वजह से थोड़ी देर में ही सेंसेक्स 83 हजार अंक के स्तर को ब्रेक करते हुए 640.06 अंक टूट कर 82,670.95 अंक के स्तर तक गिर गया। इसके बाद खरीदारों ने लिवाली का जोर बनाना शुरू किया, जिससे धीरे-धीरे इस सूचकांक की चाल में सुधार होने लगा। दोपहर 11 बजे के बाद खरीदारों ने आक्रामक अंदाज में खरीदारी शुरू कर दी, जिससे दोपहर 2 बजे के थोड़ी देर पहले सेंसेक्स निचले स्तर से 715 अंक से अधिक उछल कर 79.10 अंक की तेजी के साथ 83,390.11 अंक तक पहुंच गया। हालांकि ये तेजी अधिक देर तक टिक नहीं सकी। आखिरी घंटे के कारोबार में मुनाफा वसूली शुरू हो जाने के कारण सेंसेक्स ऊपरी स्तर से करीब 175 अंक फिसल कर 94.73 अंक की गिरावट के साथ 83,216.28 अंक के स्तर पर बंद हुआ। सेंसेक्स की तरह एनएसई के निफ्टी ने शुक्रवार को 75.90 अंक लुढ़क कर 25,433.80 अंक के स्तर से कारोबार की शुरुआत की। बाजार खुलने के कुछ देर बाद ही बिकवाली का दबाव बन जाने के कारण ये सूचकांक 191.25 अंक फिसल कर 25,318.45 अंक के स्तर पर आ गया। इसके बाद खरीदारों ने लिवाली शुरू कर दी, जिससे इस सूचकांक की चाल में सुधार होने लगा। लगातार हो रही लिवाली के कारण दोपहर 2 बजे के थोड़ी देर पहले निफ्टी निचले स्तर से 230 अंक से ज्यादा की रिकवरी करके 41.55 अंक की मजबूती के साथ 25,551.25 अंक तक पहुंचने में सफल रहा। इस स्तर पर पहुंचने के बाद बाजार में बिकवाली शुरू हो गई, जिससे इस सूचकांक ने दोबारा लाल निशान में गोता लगा दिया। पूरे दिन के कारोबार के बाद निफ्टी ऊपरी स्तर से 58 अंक से अधिक टूट कर 17.40 अंक की गिरावट के साथ 25,492.30 अंक के स्तर पर बंद हुआ। दिनभर हुई खरीद-बिक्री के बाद स्टॉक मार्केट के दिग्गज शेयरों में से श्रीराम फाइनेंस 3.01 प्रतिशत, अदानी एंटरप्राइजेज 2.38 प्रतिशत, बजाज फाइनेंस 2.37 प्रतिशत, टाटा स्टील 2.31 प्रतिशत और महिंद्रा एंड महिंद्रा 1.98 प्रतिशत की मजबूती के साथ शुक्रवार को टॉप 5 गेनर्स की सूची में शामिल हुए। दूसरी ओर, भारती एयरटेल 4.47 प्रतिशत, टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स 1.95 प्रतिशत, इंटरग्लोब एविएशन 1.92 प्रतिशत, टेक महिंद्रा 1.90 प्रतिशत और अपोलो हॉस्पिटल 1.80 प्रतिशत की कमजोरी के साथ शुक्रवार को टॉप 5 लूजर्स की सूची में शामिल हुए।

अक्टूबर में चीन का निर्यात घटा, अमेरिका को भेजे माल में आई 25 फीसदी की गिरावट

नई दिल्ली,07 नवम्बर 2025। चीन के निर्यात में अक्टूबर महीने में गिरावट दर्ज की गई है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, अमेरिका को होने वाले निर्यात में 25 प्रतिशत की तेज गिरावट आई, जिससे कुल वैश्विक निर्यात में 1.1 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई। सितंबर में चीन के निर्यात में 8.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। वहीं अक्टूबर का प्रदर्शन फरवरी के बाद सबसे कमजोर रहा। हालांकि, पिछले हफ्ते अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच हुई वार्ता के बाद दोनों देशों ने व्यापार युद्ध कम करने पर सहमति जताई है। विशेषज्ञों का मानना है कि इससे वर्ष की अंतिम तिमाही में कुछ राहत मिल सकती है, लेकिन व्यापारिक तनाव का असर अब भी अन्य बाजारों की मांग पर दिखाई दे रहा है।

चीन के आयात में एक प्रतिशत की मामूली वृद्धि दर्ज : वहीं, चीन के आयात में अक्टूबर में मामूली एक प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई, जो सितंबर के 7.4 प्रतिशत की वृद्धि दर से काफी कम है। विश्लेषकों का कहना है कि ये आंकड़े वैश्विक मांग में कमजोरी और अमेरिका-चीन व्यापारिक संबंधों में अनिश्चितता को दर्शाते हैं।

अमेरिका को निर्यातित माल में लगातार सात महीनों में गिरावट : चीन की ओर से अमेरिका को निर्यातित माल में लगातार सात महीनों से दोहरे अंक की गिरावट आ रही है, जबकि उसने अपने निर्यात बाजारों को दक्षिण-पूर्व एशिया और अफ्रीका जैसे क्षेत्रों में विविधतापूर्ण बना दिया है। अक्टूबर में आई गिरावट 2024 में इसी महीने के लिए उच्च आधार से भी प्रभावित हुई, जब निर्यात वृद्धि 12.6% से अधिक हो गई। यह दो वर्षों में सबसे तेज दर थी। पिछले महीने आयात में 1% की वृद्धि हुई, जबकि सितंबर में पिछले साल की समान अवधि में इसमें 7.4% की वृद्धि हुई थी। अर्थशास्त्रियों का कहना है कि लंबे समय से चल रही प्रॉपर्टी सेक्टर की मंदी और कमजोर घरेलू खपत चिंता का विषय बनी हुई है।

अमेरिका और चीन के रिश्तों में हुए सुधार : अक्टूबर के अंत में दक्षिण कोरिया में अपनी बैठक में, ट्रंप और शी जिनपिंग ने टैरिफ कम करने और एक-दूसरे के जहाजों पर लगाए गए नए बंदरगाह शुल्क को स्थगित करने पर सहमति जताई। चीन ने रेयर अर्थ एलिमेंट्स पर अपने कुछ निर्यात नियंत्रणों को एक साल के लिए स्थगित कर दिया और अमेरिका से सोयाबीन और अन्य कृषि उत्पादों की अधिक खरीद करने पर सहमति जताई। अमेरिका ने चीनी कंपनियों पर लगे कुछ प्रतिबंधों में ढील दी।

घटती-घटना की खबर का हुआ बड़ा असर

किशोरी से कचोहर के बीच 8 करोड़ के पुल का निर्माण ठंडे बस्ते में
पूर्व विधायक गुलाब कमरो ने लोक निर्माण विभाग रायपुर को लिखा था पत्र,पुल निर्माण नहीं होने से ग्रामीणों में पनप रहा आक्रोश
कोरिया जन सहयोग समिति के सदस्य सौपेंगे कलेक्टर कोरिया को ज्ञापन
क्या पूर्ववर्ती सरकार की थी स्वीकृति इस लिए निर्माण पर लग गया ग्रहण?
पूर्व सरकार के स्वीकृत कार्यों का निर्माण तत्काल शुरू करे सरकार : गुलाब कमरो
सोनहत,23 अक्टूबर 2025 (घटती-घटना)।

किशोरी से कचोहर के बीच 8 करोड़ के पुल निर्माण की शुरू हुई कवायद

जन सरोकार की खबर ने जगाई उम्मीद,ग्रामीणों में खुशी,निर्माण सामग्री और मशीनें पहुंची स्थल पर...

मुख्य बिंदु संक्षेप में...

- पुल निर्माण हेतु 8 करोड़ की स्वीकृति, अब मशीनें और सामग्री स्थल पर पहुंचीं
- खबर प्रकाशित होने के बाद प्रशासन और विभाग की सक्रियता बढ़ी
- पूर्व विधायक गुलाब कमरो ने दो बार लिखा था विभाग को पत्र
- कोरिया जन सहयोग समिति और ग्रामीणों ने जताया आभार
- पुल बनने से किशोरी, कचोहर और सोनाहरी समेत कई गांवों को लाभ

-राजन पांडेय-

सोनहत,07 नवंबर 2025 (घटती-घटना)।

जन सरोकार से जुड़ी खबर का एक बार फिर बड़ा असर देखने को मिला है। विकासखण्ड सोनहत के ग्राम किशोरी से ग्राम कचोहर के बीच लंबे समय से लंबित पड़े 8 करोड़ रुपये के पुल निर्माण कार्य की कवायद आखिरकार शुरू हो गई है।

सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, निर्माण एजेंसी ने नदी तट पर मशीनें, उपकरण और निर्माण सामग्री पहुंचाना प्रारंभ कर दिया है, इससे ग्रामीणों में पुल निर्माण की उम्मीद फिर से जगी है, और गांव में हर्ष का वातावरण है। पुल बनने से क्षेत्र

के ग्रामीणों को बरसों पुरानी परेशानी से मुक्ति मिलेगी।

ग्रामीणों ने घटती-घटना को दिया धन्यवाद

स्थानीय नागरिकों ने बताया कि पुल निर्माण में देरी को लेकर दैनिक घटती-घटना में प्रकाशित खबर ने प्रशासन और विभाग का ध्यान आकर्षित किया,रिपोर्ट के प्रकाशन के बाद से ही निर्माण स्थल पर गतिविधियां तेज हुई और मशीनें पहुंचने लगीं,ग्रामीणों ने कहा घटती-घटना ने हमारी आवाज सरकार तक पहुंचाई, हम इसके लिए हृदय से धन्यवाद देते हैं।

पूर्व विधायक गुलाब कमरो ने की थी पहल

इस पुल के लिए स्वीकृति और राशि पूर्व सरकार में ही जारी हो चुकी थी, किंतु निर्माण कार्य शुरू नहीं हो पा रहा था,ग्रामीणों की समस्या जानने के बाद पूर्व विधायक गुलाब कमरो ने लोक निर्माण विभाग रायपुर को दो बार पत्र लिखकर पुल निर्माण प्रारंभ करने की मांग की थी।,ग्रामीणों ने उनकी पहल की भी सराहना की और आभार व्यक्त किया।

कई गांवों की दूरी घटेगी,यातायात होगा सुगम

पुल निर्माण के बाद किशोरी और कचोहर के साथ-साथ सोनाहरी एवं आसपास के कई ग्रामों की दूरी काफी कम हो जाएगी,यह पुल न केवल कोरिया जिले के ग्रामीण क्षेत्रों को मनेंद्रगढ़ जिले से जोड़ेगा,बल्कि व्यापार और आवागमन को भी सहज बनाएगा।

जन सहयोग समिति ने जताया आभार

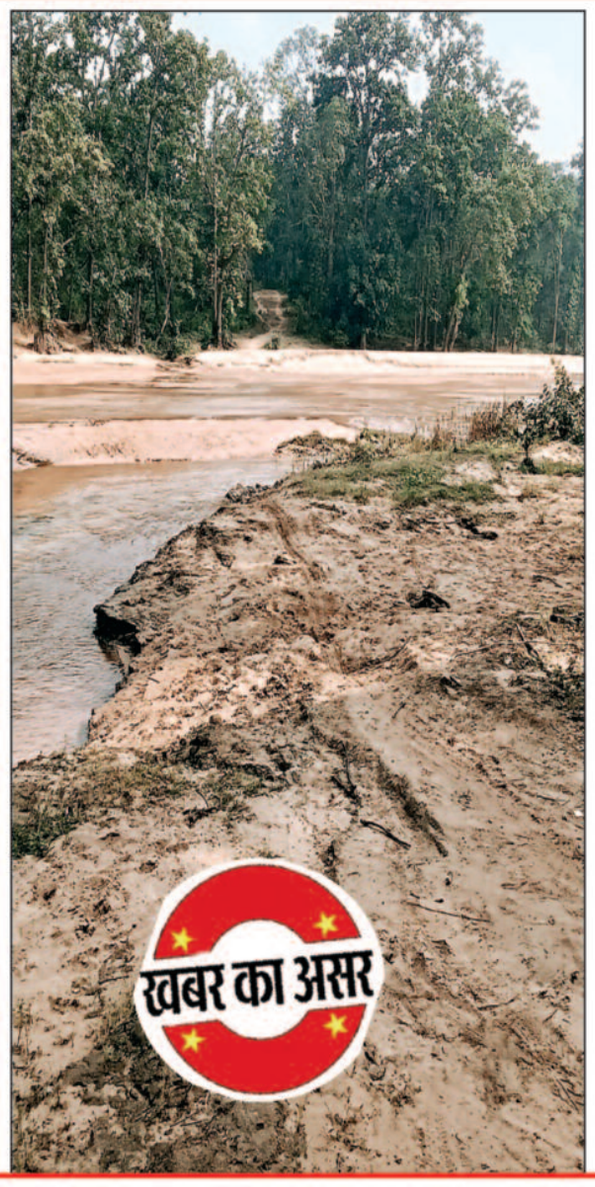

कोरिया जन सहयोग समिति के अध्यक्ष पुष्पेंद्र राजवाड़े ने बताया कि पुल के अभाव में ग्रामीणों को बरसात के दिनों में भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था, उन्होंने कहा कि पुल निर्माण के लिए लगातार विभागीय स्तर पर प्रयास किए जा रहे थे और घटती-घटना ने इस जनहित के मुद्दे को प्रमुखता से उठाकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, पुष्पेंद्र राजवाड़े ने कहा घटती घटना हमेशा आम जन की समस्याओं को सामने लाने में अग्रणी रही है, यही पत्रकारिता का असली उद्देश्य है।

किशोरी और कचोहर,नवीन ग्राम पंचायतें

पूर्व सरकार के कार्यकाल में किशोरी और कचोहर दोनों को नवीन ग्राम पंचायत का दर्जा दिया गया था,इससे पंचायत स्तर पर ग्रामीणों की सुविधा तो बढ़ी,लेकिन ब्लॉक मुख्यालय सोनहत पहुंचने के लिए नदी पार करना अब भी बड़ी समस्या थी,अब पुल निर्माण शुरू होने से इन दोनों पंचायतों के साथ-साथ आसपास के गांवों के लोगों को भी बड़ी राहत मिलने जा रही है।

श्रेय की राजनीति का नया नमूना,शुरू हो चुके काम का विधायक ने किया भूमिपूजन

- धनुहर नाले पर पुल निर्माण कार्य एक माह से जारी,फिर भी विधायक भैयालाल रजवाड़े ने किया भूमिपूजन
- बैकुंठपुर बिलासपुर मार्ग में पड़ने वाले धनुहर नाले में पुल बनाने के लिए सरकार ने स्वीकृत की है राशि
- जहां हो रहा था विधि विधान से पूजन, वहीं पर जूता रख कुर्सी पर बैठे देखे गए विधायक
- इसके पहले भी भाजपा कार्यालय के भूमिपूजन में इसी प्रकार कुर्सी पर बैठे थे विधायक
- इंसान नहीं कम से कम भगवान को ही मानिए विधायक जी...

पुल निर्माण से मिलेगी राहत

लोक निर्माण विभाग (सेतु संभाग) की देखरेख में बन रहे इस पुल से भारी वाहनों को बड़ी राहत मिलेगी। पुराने पुल की जर्जर स्थिति के कारण आए दिन हादसे होते थे और मार्ग घंटों बाधित रहता था। मगर अब जब निर्माण कार्य सुचारू रूप से चल रहा है, उसी के बीच दोबारा भूमिपूजन कर देना लोगों के बीच हास्य और आलोचना दोनों का विषय बन गया है,इस मौके पर जिला पंचायत अध्यक्ष मोहित पैकरा, उपाध्यक्ष वंदना राजवाड़े और अन्य जनप्रतिनिधि भी उपस्थित रहे।

-राजन पांडेय-

कोरिया,07 नवंबर 2025 (घटती-घटना)।

बैकुंठपुर-बिलासपुर मार्ग के ग्राम मनसुख स्थित धनुहर नाले पर पिछले एक माह से पुल निर्माण का कार्य जारी है। इस पुल के लिए राज्य सरकार ने 502.70 लाख रुपये की राशि स्वीकृत कर दी है। लेकिन शुक्रवार को विधायक भैयालाल रजवाड़े ने उसी स्थल पर फिर से भूमिपूजन कर सभी को चौंका दिया,स्थानीय लोगों और जानकारों का कहना है कि भूमिपूजन सदैव कार्य आरंभ से पहले किया जाता है, कार्य शुरू होने के बाद नहीं। ऐसे में विधायक का यह कदम श्रेय लेने की होड़ के रूप में देखा जा रहा है।

जानकारों का कहना है कि किसी भी काम का भूमिपूजन काम शुरू होने के पहले किया जाता है ना कि काम शुरू होने के बाद, बैकुंठपुर बिलासपुर मुख्य मार्ग में

Bhaiya Lal Rajwade
4m
छत्तीसगढ़ शासन लोक निर्माण विभाग सेतु संभाग अम्बिकापुर द्वारा जिला कोरिया के बैकुंण्ठपुर से बिलासपुर मार्ग पर धनुहर नाला में 502.70 लाख लागत से बनने वाला उच्च स्तरीय पुल का भूमिपूजन किया क्षेत्र के लिए यह एक बहुत बड़ी सौगात हैं प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री Vishnu Deo Sai जी का क्षेत्र की जनता की और से बधाई एवं धन्यवाद।

धनुहर नाला का पुराना पुल भारी वाहन चालकों के लिए सर दर्द बन चुका था आए दिन दुघर्टना के कारण मार्ग भी घंटों बाधित रहता था,लंबे समय से उक्त नाले पर बड़े पुल की मांग की जा रही थी,जिला प्रशासन की रिपोर्ट पर राज्य सरकार ने इसी वित्तीय वर्ष में राशि जारी की है और निर्माण एजेंसी ने काम महीने भर पहले काम शुरू भी कर दिया है। लोक निर्माण विभाग सेतु संभाग की देखरेख में बनाए जा रहे पुल के बन जाने से वाहन चालकों को काफी राहत मिलेगी लेकिन हास्यास्पद है कि श्रेय लेने के चक्कर में विधायक श्री रजवाड़े ने शुरू हो चुके कार्य का शुक्रवार को भूमिपूजन किया। इस दौरान जिला पंचायत अध्यक्ष मोहित पैकरा, उपाध्यक्ष वंदना राजवाड़े समेत

जूते दबाकर पूजा स्थल के पास बैठे दिखे विधायक

कार्यक्रम के दौरान विधायक का एक और रूप चर्चा में रहा। जब पुजारी विधि विधान से पूजा करा रहे थे, उसी दौरान विधायक श्री रजवाड़े जूते पहने कुर्सी पर बैठे देखे गए। उपस्थित लोगों ने बताया कि इससे पूजन में असहजता की स्थिति बनी,मगर विधायक की मौजूदगी के कारण किसी ने कुछ नहीं कहा।

पहले भी दोहराया जा चुका ऐसा दृश्य

विधायक भैयालाल रजवाड़े पहले भी इसी प्रकार के दृश्य में देखे जा चुके हैं। कुछ समय पहले भाजपा कार्यालय के भूमिपूजन के दौरान भी वे पूजा के वक्त कुर्सी पर बैठे और जूते नहीं उतारे थे,लोगों ने टिप्पणी की कहा इंसान नहीं तो कम से कम भगवान का तो मान रखिए विधायक जी!

इस घटना ने लिया व्यंग्यात्मक रूप

श्रेय की राजनीति का नया नमूना! बैकुंठपुर विधायक भैयालाल रजवाड़े ने उस पुल का भूमिपूजन किया, जिसका निर्माण काम एक महीने पहले से चल रहा है! धनुहर नाले का पुल,सरकार से 502.70 लाख की स्वीकृति पहले ही जारी, लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती,जब पंडित जी मंत्रोच्चार कर रहे थे, विधायक जी कुर्सी पर बैठे जूते दबा रहे थे! जनता बोली, इंसान नहीं, कम से कम भगवान को तो मान लीजिए विधायक जी!

पुताई करते दिखे विद्यार्थी-शिक्षिका भी रही उपस्थित

-संवाददाता-

कोरबा,07 नवंबर 2025 (घटती-घटना)।

जिला मुख्यालय में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पीडब्ल्यूडी रामपुर (ब्लॉक शिक्षा कार्यालय कोरबा) के अंतर्गत विद्यार्थियों से ही रंग-रोगन का कार्य कराया जा रहा है। विद्यालय की साज-सज्जा करने के लिए निःसन्देह सरकारी राशि उपलब्ध कराई गई होगी, लेकिन जिस तरह से विद्यार्थी अपने कक्ष में दीवार और खिड़कियों की रंगाई-पुताई करते नजर आए, उससे तो यही लग रहा है कि यहां अधिकांश कार्य विद्यार्थियों से कराया गया और शासन से मिले खर्च की राशि को फर्जी बिल लगाकर

हजम करने का काम किया जाएगा। यह नजारा पेश आया जब एक कक्षा में कुछ विद्यार्थी गणवेश में तो कुछ विद्यार्थी बिना गणवेश के घरेलू कपड़ों में दीवार और खिड़की की पुताई करते नजर आए।

कार्यालय अधीक्षण अभियंता

लोक निर्माण विभाग (भ/स)

अम्बिकापुर मंडल अम्बिकापुर,सरगुजा,छत्तीसगढ़

निविदा आमंत्रण तिथि- 04/11/2025

ई-प्रोक्योरमेंट निविदा सूचना

01. निविदा की विस्तृत जानकारी के लिए Log in करें http://eproc.cgstate.gov.in
02. संबंधित संभाग-रामानुजगंज संभाग
03. सं.क्र. 1 'द' वर्ग एवं उपर ठेकेदार
04. ऑनलाईन निविदा डालने की अंतिम तिथि सं.क्र. 1- 21.11.2025

सरल क्र.	एन.आई.टी.क्र.	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख में)
1	2	3	4
1	207	रामानुजगंज न्यायालय भवन जिला बलरामपुर-रामानुजगंज के आंगन में शेड का निर्माण कार्य। (प्रथम आमंत्रण)	20.82

अधीक्षण अभियंता
लोक निर्माण विभाग
अम्बिकापुर मंण्डल,अम्बिकापुर

जी.न.- 252604545/3

क्या पटना तहसील ने नहीं ली सबक?

फिर अनाधिकृत व्यक्तियों से सरकारी काम...

पहले तहसीलदार की आईडी से हुआ था धान घोटाला,अब वही गलती दोहराई जा रही है,जवाबदेही से बचने का नया तरीका...

स्थानीय निवासी कर्मचारी का तहसील कार्यालय में क्या काम,क्या न्यायिक व्यवस्था प्रभावित नहीं होगा?

2 महीने के लिए स्थानांतरण होता है फिर वापस अपनी सुविधा अनुसार राजनीतिक पकड़ पर आ जाते हैं कर्मचारी गृह क्षेत्र

-रवि सिंह-

बैकुंठपुर/पटना,07 नवंबर 2025 (घटती-घटना)।

कोरिया जिले की पटना तहसील एक बार फिर विवादों में है,कुछ माह पहले जिस तरह तहसीलदार की लॉगिन आईडी से धान खरीदी के दौरान रकबा हेरफेर और फर्जीवाड़े का मामला सामने आया था, अब वही खेल एक बार फिर दोहराया जा रहा है, तहसील में अब भी अनाधिकृत व्यक्तियों से सरकारी कार्य करवाए जा रहे हैं, और यह सब कुछ अधिकारियों की जानकारी में हो रहा है।

बता दे की कोरिया जिले के पटना तहसील से एक बार फिर ऐसी जानकारी सामने आ रही है जो यह साबित कर रही है कि तहसील कार्यालय में अनाधिकृत व्यक्तियों का ही राज है और उन्हीं की मंशा से या तो काम हो रहा है या फिर अनाधिकृत

अधिकारी अपना महत्वपूर्ण आईडी,पासवर्ड अनाधिकृत व्यक्ति को देकर धान का रकबा सुधरवाते हैं,वहीं फर्जीवाड़ा हो जाने बाद अनाधिकृत व्यक्ति पर पूरा दोष मढ़ दिया जाता है...

व्यक्ति से कार्य लेकर अंत में गड़बड़ी का किसी उसी पर आरोप डालकर अधिकारियों का बच निकलने का यह नया एक हथकंडा है,बताया जाता है कि पहले भी ऐसा हुआ है और जब गड़बड़ी सामने आई तब अनाधिकृत व्यक्तियों पर आरोप लगाकर मामले में खुद को पाक साफ बता ले गए थे अधिकारी, वर्तमान समय धान खरीदी की शुरूआत का समय है,15 नवंबर से धान खरीदी की जानी है और इस समय शासन गिरदावरी अभियान भी चलाती है जिसमें यह तय किया जाता है कि किसान कितने रकबे में धान की फसल लगाया है,गिरदावरी में यदि रकबा खेती का कम पाया जाता है तो फिर धान बिक्री की सीमा कम की जाती है और यही से फिर खेल शुरू होता है रकबा सुधार का, हाल फिलहाल में पटना तहसील में अनाधिकृत व्यक्ति ही काम करते नजर आ रहे हैं जिन्हें माना जा रहा है इसी कार्य के लिए रखा गया है, जबकि पूर्व में जनवरी 2023 में पटना तहसील से बड़ा फर्जीवाड़ा उजागर हुआ था, एक किसान ने अपनी जमीन का रकबा तहसील रिकॉर्ड में बढ़वाकर अधिक धान बेचा था, और बाद में रकम आहरण के पश्चात रकबा पुनः घटा दिया गया था। यह पूरा खेल तहसीलदार की आईडी से हुआ था, जांच में सामने आया कि किसान अजय कुमार कुशवाहा, उसके भाई अरविंद कुशवाहा और तहसील में कार्यरत निजी व्यक्ति की मिलीभगत से यह हेरफेर किया गया था। पुलिस ने धारा 409, 420, 120बी, 467, 468, 471 भादवि एवं 66(घ) आईटी एक्ट के तहत अपराध पंजीबद्ध किया था, परंतु आश्चर्यजनक रूप से उस समय तहसीलदार को आरोपपत्र से बाहर रखा गया, जबकि वही आईडी उनके नाम से पंजीकृत थी। स्थानीय सूत्रों के अनुसार, एनआईसी के तकनीकी विशेषज्ञों ने बार-बार रकबा परिवर्तन को देखकर इस फर्जीवाड़े का खुलासा किया था।

पूर्व में तहसीलदार की आईडी से चला था फर्जीवाड़ा

साल 2023 में पटना तहसील से एक बड़ा फर्जीवाड़ा उजागर हुआ था। किसान अजय कुमार कुशवाहा ने अपनी जमीन का रकबा तहसील रिकॉर्ड में बढ़ाकर ज्यादा धान बेचा और रकम आहरण के बाद रकबा घटा दिया, जांच में पता चला कि यह पूरा खेल तहसीलदार की लॉगिन आईडी से किया गया था। इसमें किसान के साथ उसका भाई अरविंद कुशवाहा और तहसील का निजी ऑपरेटर शामिल थे,एनआईसी के तकनीकी विशेषज्ञों ने जब एक ही खाते में बार-बार रकबा बढ़ने और घटने की गतिविधि देखी, तब यह मामला उजागर हुआ, मामले में एफआईआर तो दर्ज हुई, परंतु तहसीलदार को आरोपपत्र से बाहर रखा गया, जिससे प्रशासनिक जवाबदेही पर सवाल उठे।

अब फिर वही तरीका, निजी लोगों को सौंप दी आईडी

धान खरीदी का सीजन शुरू होने से पहले अब फिर से गिरदावरी और रकबा सुधार के नाम पर गड़बड़ियों की खबरें आ रही हैं, सूत्रों के अनुसार तहसीलदार अपनी लॉगिन आईडी और पासवर्ड निजी व्यक्तियों को सौंप देते हैं, ये व्यक्ति राजस्व अभिलेखों में परिवर्तन कर रहे हैं, जबकि यह कार्य केवल शासकीय अधिकारियों को ही करने का अधिकार है, स्थानीय सूत्रों का कहना है कि यह सब उच्चाधिकारियों की जानकारी में है,जब कोई फर्जीवाड़ा पकड़ में आता है तो ठीकरा इन्हीं अनाधिकृत लोगों पर फोड़कर अधिकारी खुद को बचा लेते हैं।

राजनीतिक संरक्षण बना सुरक्षा कवच

कहा जा रहा है कि पटना तहसील में कुछ कर्मचारियों की राजनीतिक पकड़ इतनी मजबूत है कि स्थानांतरण के बावजूद वे जल्द ही वापस लौट आते हैं, इस कारण न तो अधिकारी कार्रवाई कर पाते हैं, न ही भ्रष्टाचार पर अंकुश लग पाता है,स्थानीय लोगों का आरोप है कि राजनीतिक संरक्षण के बिना ऐसी हिम्मत संभव ही नहीं है।

हाईकोर्ट के आदेश की खुलेआम अवहेलना

छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय, बिलासपुर ने स्पष्ट रूप से कहा है कि किसी भी शासकीय कार्यालय में अनाधिकृत व्यक्ति से कार्य कराना अवैध है, इसके बावजूद पटना तहसील में निजी कंप्यूटर ऑपरेटर काम कर रहे हैं और अधिकारी उन्हें अपनी आईडी तक सौंप रहे हैं,यह न केवल प्रशासनिक लापरवाही है बल्कि आपराधिक जिम्मेदारी भी बनती है।

स्थानीय व्यक्तियों का प्रभाव और राजनीतिक संरक्षण

स्थानीय लोगों का कहना है कि तहसील में कुछ कर्मचारियों की पकड़ इतनी मजबूत है कि उनका स्थानांतरण भी केवल औपचारिकता रह गया है, अक्सर ऐसे कर्मचारी दो महीने के भीतर ही राजनीतिक संरक्षण के दम पर वापस गृह क्षेत्र में लौट आते हैं।

कौन करेगा जवाबदेही तय?

जब तहसीलदार की आईडी से फर्जीवाड़ा होता है, तो सवाल उठता है, अगर अधिकारी खुद अपनी आईडी की सुरक्षा नहीं कर पा रहे, तो जनता की जमीन का रिकॉर्ड कैसे सुरक्षित रहेगा? पिछले प्रकरण में केवल तीन निजी लोगों पर एफआईआर दर्ज की गई, जबकि तहसीलदार और अन्य जिम्मेदार अधिकारी आज भी पदस्थ हैं। इससे यह संदेह और गहरा हो जाता है कि क्या कार्रवाई केवल दिखावे के लिए की जा रही है?

स्थानीय लोगों की मांग,उच्चस्तरीय जांच जरूरी

स्थानीय नागरिकों और किसान संगठनों ने राज्य शासन से उच्च स्तरीय जांच की मांग की है, उनका कहना है कि जब तक जिम्मेदार अधिकारी खुद जवाबदेह नहीं ठहराए जाएंगे, तब तक पटना तहसील में 'अनाधिकृत शासन' चलता रहेगा।

क्या पटना तहसील ने अब भी सबक नहीं लिया?

धान खरीदी, रकबा सुधार और आईडी के दुरुपयोग से जुड़ा यह प्रकरण केवल प्रशासनिक चूक नहीं, बल्कि व्यवस्था की विश्वसनीयता पर सीधा प्रश्न है, अगर शासन ने अब भी कठोर कदम नहीं उठाए, तो आने वाले समय में यह सवाल और प्रबल होगा, क्या पटना तहसील ने अब भी सबक नहीं लिया?

वाह रे राजस्व विभाग! जिसके खिलाफ है प्राथमिकी दर्ज कराया उसे खुलेआम कार्यालय बुला कर ले रहे हैं काम

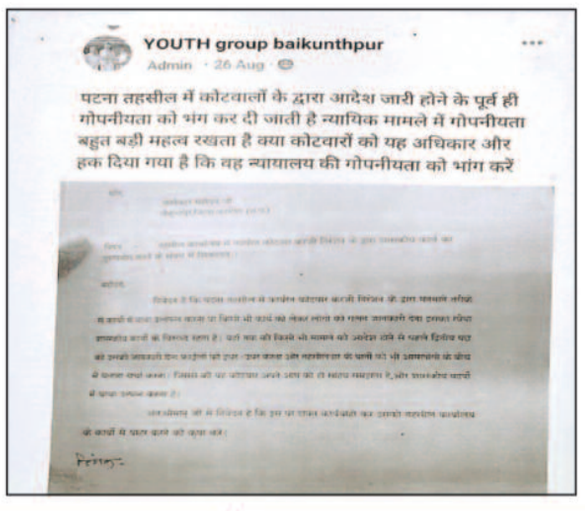
YOUTH group baikunthpur
Admin · 26 Aug
पटना तहसील में कोटवालों के द्वारा आदेश जारी होने के पूर्व ही गोपनीयता को भंग कर दी जाती है न्यायिक मामले में गोपनीयता बहुत बड़ी महत्व रखता है क्या कोटवारों को यह अधिकार और हक दिया गया है कि वह न्यायालय की गोपनीयता को भांग करें

तहसीलदार की आईडी से घटता व बढ़ता रहा रकबा फिर भी तहसीलदार अनजान कैसे?

2 महीने के लिए होता है तबादला, फिर राजनीतिक पकड़ से लौट आते हैं गृह क्षेत्र

प्रशासनिक रिकॉर्ड के अनुसार,कई बार ऐसे कर्मचारियों का औपचारिक रूप से स्थानांतरण तो किया जाता है,परंतु दो महीने से भी कम समय में वे राजनीतिक दबाव या स्थानीय संरक्षण के बल पर फिर अपने गृह क्षेत्र में वापस लौट आते हैं,यह न केवल कलेक्टर व कमिश्नर की कार्यवाही को कमजोर करता है,बल्कि पूरे तहसील प्रशासन की विश्वसनीयता पर भी प्रश्नचिह्न लगाता है। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि जब तबादला केवल औपचारिकता बन जाए और राजनीतिक हस्तक्षेप व्यवस्था का हिस्सा बन जाए,तो निष्पक्ष प्रशासन की उम्मीद करना व्यर्थ है।

स्थानीय निवासी कर्मचारी का तहसील कार्यालय में क्या काम? क्या न्यायिक व्यवस्था प्रभावित नहीं होगी?

पटना तहसील में पदस्थ कई कर्मचारी उसी क्षेत्र के निवासी हैं,जहाँ वे राजस्व मामलों में प्रत्यक्ष रूप से निर्णय लेते हैं,इससे हितों का टकराव की स्थिति बनती है क्योंकि वही कर्मचारी, जिनके परिवार या परिचितों के नाम पर भूमि विवाद लंबित हैं,उसी कार्यालय में नाप-जोख,सीमांकन और रकबा सुधार जैसे कार्य करते हैं,स्थानीय लोगों का कहना है कि यह स्थिति न्यायिक निष्पक्षता को सीधे प्रभावित करती है,जब कर्मचारी स्वयं अपने ही क्षेत्र में अधिकारी बन जाएँ, तो सामान्य जनता निष्पक्ष न्याय की उम्मीद कैसे करे? यह सवाल अब ग्रामीणों के बीच गूंज रहा है।वैसे यह कर्मचारी अपने नाम से जमीन भी बना रहे हैं ऐसा सूत्रों का दावा है।

ठप्प पड़े विकास कार्यों को लेकर जिले के सरपंच हुए लामबंद

कलेक्टर व जिला पंचायत सीईओ कार्यालय में सौंपा ज्ञापन

-संवाददाता-

मनेंद्रगढ़,07 नवंबर 2025 (घटती-घटना)।

एमसीबी जिले के ग्राम पंचायतों में ठप पड़े विकास कार्यों को लेकर आज सरपंचों ने एकजुट होकर मोर्चा खोल दिया। लंबे समय से रुके हुए ग्राम पंचायतों के कार्यों और वित्तीय अनुदानों की देरी से वितरण के विरोध में जिले के सभी सरपंचों ने कलेक्टर एवं जिला पंचायत सीईओ को सामूहिक रूप से ज्ञापन सौंपा। सरपंचों ने ज्ञापन में मांग की कि ग्राम पंचायतों में मूलभूत विकास कार्यों नालियों का निर्माण, पेयजल व्यवस्था, सड़क मरम्मत, आंगनबाड़ी भवनों का निर्माण और स्वच्छता कार्यों – को तत्काल शुरू किया जाए। साथ ही 15वें वित्त आयोग की राशि, संस्कृतिक कार्यक्रमों हेतु निधि, और मनरेगा के लंबित कार्यों को शीघ्र स्वीकृति देने की भी मांग रखी, सरपंचों ने कहा कि पंचायतों में महीनों से कोई कार्य नहीं हो रहा है, जिससे ग्रामीणों में भारी असंतोष है, इस मौके पर सरपंचों की मांगों को जिला पंचायत उपाध्यक्ष राजेश साहू, सदस्य उजित नारायण सिंह और रामजीत लकड़ा (भगत बाबू) ने समर्थन दिया। तीनों प्रतिनिधियों ने कहा कि ग्राम पंचायतों में विकास ठप पड़ना चिंताजनक है और प्रशासन को तत्काल निधियों का वितरण सुनिश्चित करना चाहिए ताकि जनहित के कार्य गति पकड़ सकें।

पंचायतों में विकास कार्यों पर सरकार ध्यान नहीं:कमरो

ज्ञापन सौंपे जाने के बाद भरतपुरङ्गसोनहत के पूर्व विधायक गुलाब कमरों ने मौजूदा सरकार पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा भाजपा सरकार को दो वर्ष होने को हैं, लेकिन आज तक ग्राम पंचायतों में कोई ठोस विकास कार्य नहीं हुआ। सरकार बताए कि विकास का पैसा आखिर गया कहाँ? उन्होंने कहा कि जब कांग्रेस की सरकार थी और वे विधायक थे,तब भरतपुरङ्गसोनहत के प्रत्येक ग्राम पंचायत में काम होता था। आज 'डबल इंजन सरकार' होने के बावजूद ग्रामीण इलाकों में विकास कार्य पूरी तरह ठप हैं। कमरों ने यह भी कहा कि अगर जल्द स्थिति नहीं सुधरी, तो वे स्वयं ग्रामीणों के साथ सड़क पर उतरकर आंदोलन करने से पीछे नहीं हटेंगे।

वो जो 13 साल पहले खो गई थी...सखी ने दिलाया परिवार का दामन

-संवाददाता-

सूरजपुर,07 नवंबर 2025 (घटती-घटना)।

कभी-कभी जिंदगी ऐसी कहानियाँ लिख देती है जो फिल्मी लगती हैं,मगर सच्चाई उससे कहीं ज्यादा भावुक होती है...ऐसी ही एक सच्ची कहानी है उस महिला की, जो 13 लंबे सालों तक अपने घर-परिवार से बिछड़ी रही,और फिर सखी वन स्टॉप सेंटर सूरजपुर की संवेदनशील पहल से अपने अपनों की गोद में लौट पाई..

रामानुजनगर रेलवे स्टेशन के पास एक अज्ञात अर्धविक्षिप्त महिला घायल अवस्था में रेलवे ट्रैक किनारे बैठी पाई गई थी,,राहगीरों ने इसकी सूचना संबंधित विभाग को दी..महिला की सुरक्षा और देखभाल के लिए उसे सखी वन स्टॉप सेंटर सूरजपुर लाया गया...सखी टीम ने न केवल तुरंत चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई, बल्कि इलाज के बाद उसके मन की परतें समझने की कोशिश भी शुरू की...शुरुआत में महिला कुछ भी स्पष्ट नहीं बता पा रही थी.. उसकी जुबान पर बस टूटी-फूटी बातें थीं,जो किसी गहरी पीड़ा की गवाही दे रही थीं..लेकिन बातचीत के दौरान जब उसने बिहारी भाषा,में

बोलना शुरू किया और बार-बार छपरा बहास, का नाम लिया,तो सखी टीम को एक उम्मीद की किरण दिखी...उन्होंने तुरंत संबंधित थाने और बिहार के सखी वन स्टॉप सेंटरों से संपर्क साधा...सखी स्टाफ ने सोशल मीडिया और व्हॉट्सऐप के जरिए महिला की जानकारी साझा की,ताकि कोई सुराग मिल सके...धीरे-धीरे यह प्रयास रंग लाया पता चला कि महिला बिहार के छपरा बहास, पूर्वी चम्पारण की रहने वाली है... टीम ने वीडियो कॉल के माध्यम से महिला की उसकी मां,बेटे और अन्य परिवारजनों से बातचीत कराई...उस पल की भावनाएँ शब्दों में बयाँ नहीं की जा सकतीं, महिला ने अपनी मां और बेटे को तुरंत पहचान लिया.13 वर्षों बाद अपनी बेटी की खबर सुनकर परिवार खुशी से झूम उठा...बिहार से सूरजपुर तक का लंबा सफर तय करते हुए महिला की मां, बेटा और भाभी उसे लेने पहुंचे..सखी सेंटर ने परिवार के साथ परामर्श सत्र आयोजित किया,जिसमें पता चला कि महिला के चार बच्चे हैं और उसके पति का देहांत पहले ही हो चुका है...मानसिक रूप से अस्वस्थ होने के कारण वह 13 साल पहले घर से निकल गई थी...परिवार ने हर जगह खोज की, पर कोई पता नहीं चल सका था...भावुक क्षणों के बीच जब मां ने अपनी बेटी को गले लगाया, तो वहां मौजूद हर आंख नम हो गई...सखी टीम ने महिला को विधिवत परामर्श और चिकित्सकीय देखरेख के बाद परिवार को सौंप दिया...महिला के परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर थी और बिहार लौटने में कठिनाई थी... इस पर जिला कार्यक्रम अधिकारी शुभम बंसल ने मानवीय पहल दिखाते हुए उन्हें सहयोग राशि प्रदान की, जिससे वे सुरक्षित रूप से घर लौट सके...परिवार ने सखी वन स्टॉप सेंटर और महिला एवं बाल विकास विभाग के प्रति आभार व्यक्त किया..यह घटना इस बात का प्रमाण है कि जब उम्मीद अपनो के मिलने की हो तो कोई भी दूरी चाहे वह 13 साल की क्यों न हो पार की जा सकती है।

CMYK

किरण राव ने फिल्म 'लगान' के सेट पर कॉफी पिलाई

आमिर से शादी की बात सुनकर पेरेंट्स हैरान हुए, 'लापता लेडीज' से रिकॉर्ड बनाया

एक ऐसी डायरेक्टर,जिसकी फिल्में भले ज्यादा शोर नहीं करतीं, लेकिन गहरा असर छोड़ जाती हैं। उनकी फिल्मों में ग्लैमर भले कम हो, लेकिन भावनाओं की गहराई हमेशा मौजूद रहती है। उनके किरदारों के चेहरे पर चमक न सही, पर उनकी आंखों में संघर्ष और दिल में उम्मीद साफ झलकती है। जी हां, हम बात कर रहे हैं किरण राव की, जो उन फिल्ममेकर्स में से हैं, जो सिनेमा को सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज को समझने और दिखाने का जरिया मानते हैं। किरण राव का जन्म बेंगलुरु में हुआ था, लेकिन उनका बचपन कोलकाता में बीता। किरण के फैमिली बैकग्राउंड की बात करें, तो लोग अक्सर उन्हें तेलंगाना की रॉयल फैमिली से जोड़ते हैं। हालांकि लल्लनटॉप को दिए इंटरव्यू में किरण ने बताया था कि उनका सीधा संबंध रॉयल फैमिली से नहीं है। तेलंगाना से उनका कनेक्शन उनके दादा की बहन के जरिए है, जिनकी शादी वनपर्थी के राजा जे. रामेश्वर राव से हुई थी। किरण खुद को कर्नाटक और कोलकाता दोनों की मिली-जुली सांस्कृतिक पहचान मानती हैं। वहीं, एक्ट्रेस अदिति राव हैदरी उनकी कजिन हैं। किरण की मां उमा राव एक स्कूल टीचर थीं,जबकि उनके पिता सी.आर. राव, गेस्ट कीन एंड विलियम्स नाम की ब्रिटिश आयरन-स्टील कंपनी में मार्केटिंग का काम करते थे। किरण ने अपनी स्कूलिंग कोलकाता के लोरेटो हाउस और फिर ला मार्टिनियर फॉर गर्ल्स से की। इसके बाद वे मुंबई के सोफिया कॉलेज में आर्ट्स की पढ़ाई करने गईं। आगे उन्होंने दिल्ली की जामिया मिलिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी से मास कम्युनिकेशन में मास्टर किया है। जामिया से मास कम्युनिकेशन में मास्टर करने के बाद किरण ने फिल्म इंडस्ट्री में काम करने के लिए मुंबई का रुख किया। उनकी पहली फिल्म आशुतोष गोवारिकर की 'लगान' थी। जिसमें उन्होंने असिस्टेंट डायरेक्टर की भूमिका निभाई थी। फिल्म 'लगान' की सफलता सिर्फ आशुतोष गोवारिकर और आमिर खान के विजन की कहानी नहीं है, बल्कि उस टीम के जज्बे की भी है, जिसने छह महीनों तक रेगिस्तान जैसी कठोर परिस्थितियों में मेहनत की। उस टीम की सबसे मेहनती सदस्यों में एक किरण राव भी थीं। किरण राव का काम सभी कलाकारों को मेकअप, हेयरस्टाइल, कपड़ों से लेकर सेट तक लाना था। किरण रोज सुबह 4 से 4:30 बजे तक सेट पर पहुंच जाती थीं ताकि शूटिंग सही तरीके से शुरू हो सके। यहां तक कि कई बार उन्हें सेट पर एक्टर्स के लिए कॉफी लाने के भी कहा जाता था। 'लगान' की शूटिंग को लेकर द लल्लनटॉप को दिए इंटरव्यू में उन्होंने बताया था, 'सेट पर पहुंचने से पहले मैं वॉकी-टॉकी पर टोस्टर चालू करने के लिए कहती रहती थी। फिल्म में 'एलिजाबेथ' का रोल निभाने वाली एक्ट्रेस रचेल शेली सुबह सबसे पहले टोस्ट चाहती थीं। ' एक्टर अखिलेंद्र मिश्रा ने बताया, 'फिल्म 'लगान' के चीफ असिस्टेंट डायरेक्टर अपूर्व लाखिया थे। अपूर्व ने हॉलीवुड फिल्मों 'द आइस स्टॉर्म' और 'ए परफेक्ट मर्डर' में भी असिस्टेंट के रूप में काम किया था। आमिर खान उन्हें इंडिया लेकर आए थे। अपूर्व ने फिर 'लगान' की टीम में तीन और असिस्टेंट डायरेक्टर्स रीमा कागती, प्रियंवदा नारायणन और किरण राव को शामिल किया। ' अखिलेंद्र मिश्रा के अनुसार, 'आजकल प्रोडक्शन का मतलब सिर्फ चीजों को मैनेज करना होता है, लेकिन 'लगान' के सेट पर काम एक अलग ही लेवल पर होता था। किरण राव का काम महज कॉलशीट थमाना नहीं था। वे सुनिश्चित करती थीं कि हर एक्टर, खासकर एक्ट्रेसेस, समय पर तैयार हों, उन्हें नाश्ता मिले और वे सेट पर सही समय पर पहुंचें। ' सेट पर अनुशासन का आलम यह था कि अगर कोई कलाकार तैयार होकर सेट पर घूमने निकल जाए, तो किरण और उनकी टीम साफ हिदायत देती थी- 'आप अलाउड नहीं हैं। अपने कमरे या मेकअप रूम में इंतजार कीजिए। 'अखिलेंद्र मिश्रा ने बताया कि इस फिल्म की सफलता का बड़ा श्रेय अपूर्व लाखिया और उनकी टीम किरण, रीमा और प्रिया को जाता है। इन तीनों का काम देखकर हम सभी एक्टर्स उनके फैन थे। अखिलेंद्र मिश्रा ने आगे बताया कि गांव में रोजाना की शूटिंग में करीब 1 हजार लोगों की भीड़ होती थी और क्लाइमेक्स सीन में यह संख्या 10 हजार तक पहुंच गई थी। उन हजारों लोगों के कपड़ों, उनकी कन्टीन्यूटी, यहां तक कि उनकी बकरियों तक की कन्टीन्यूटी बनाए रखना किरण और उनकी टीम ने सब कुछ बखूबी संभाला। 'लगान' के बाद किरण राव ने आशुतोष गोवारिकर की फिल्म स्वदेश और मीरा नायर की फिल्म 'मानसून वेडिंग' में बतौर असिस्टेंट डायरेक्टर काम किया था।

डायरेक्टर के तौर पर पहली फिल्म

एक दशक तक सीख, समझ और अनुभव के बाद किरण ने अपनी पहली फिल्म बतौर डायरेक्टर 'धोबी घाट' बनाई थी। फिल्म की बात करें तो यह फिल्म मुंबई शहर, अकेलेपन, सपनों और रिश्तों की नर्म परतों के बारे में थी। 'धोबी घाट' का वर्ल्ड प्रीमियर सितंबर 2010 में टोरंटो अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में हुआ था और यह 21 जनवरी 2011 को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी। 5 करोड़ रुपए की लागत में बनी इस फिल्म ने दुनिया भर में 25 करोड़ रुपए का बिजनेस किया था। फिल्म की क्रिटिक्स ने भी तारीफ की थी। इस फिल्म को 65वें ब्रिटिश अकादमी फिल्म अवॉर्ड्स में बेस्ट नॉन-इंग्लिश लैंग्वेज फिल्म कैटेगरी में लिस्टेड किया गया था। फिल्म 'धोबी घाट' में काम करने वाले एक्टर दानिश हुसैन ने बातचीत में बताया कि यह फिल्म उनके लिए सिर्फ एक प्रोजेक्ट नहीं,बल्कि किरण राव के विजन और डायरेक्शन की पाठशाला थी। दानिश के अनुसार, किरण राव ने शूटिंग के हर पहलू में शानदार बैलेंस बनाए रखा। उन्होंने कहा,'वो कभी ऊंची आवाज में बात नहीं करतीं,लेकिन सेट पर उनकी पकड़ बहुत मजबूत होती थी। उन्हें पता होता था कि फिल्म को कहां ले जाना है। ' दानिश बताया कि जब उन्होंने 'धोबी घाट' में काम किया,तब वे सिनेमा की दुनिया में बिल्कुल नए थे। उस वक्त उन्हें स्क्रीन एक्टिंग की समझ बहुत कम थी, वाइड शॉट्स में कैसे एक्ट करना चाहिए,कैमरे के सामने कितनी ऊर्जा रखनी चाहिए,ये सब वो सीख ही रहे थे। दानिश कहते हैं,'किरण समझ गई थीं कि मेरा टेक्निकल सेंस थोड़ा कमजोर है। वे अक्सर कहती थीं, 'टेंशन मत लो, बस एक्टिंग पर ध्यान दो।' उनके ये शब्द मुझे तुरंत सहज कर देते थे। मेरा आत्मविश्वास वहीं से बढ़ने लगा। ' दानिश बताते हैं कि हाल ही में जब उन्होंने 'धोबी घाट' को 14 साल बाद फिर से देखा, तो वे खुद अपनी परफॉर्मेंस देखकर चकित रह गए। उन्होंने कहा, 'फिल्म में मेरा जो बंबइया लहजा था, वो असल में किरण राव की तैयारी और उनके निर्देशन से आया था। '

आमिर खान और किरण राव का रिश्ता

आमिर खान और किरण राव का रिश्ता एक प्रोफेशनल सहयोग से शुरू होकर फ्रेंडशिप,लव और मैरिज तक पहुंचा। समय के साथ यह रिश्ता परिपक्वता और आपसी सम्मान का उदाहरण बन गया। दोनों की पहली मुलाकात 2000 में फिल्म लगान के सेट पर हुई थी। उस समय आमिर फिल्म के लीड एक्टर और प्रोड्यूसर थे, जबकि किरण असिस्टेंट डायरेक्टर के रूप में काम कर रही थीं। हालांकि उस दौरान दोनों का कोई खास रिश्ता नहीं था। वो अच्छे दोस्त भी नहीं थे। बस यूनिट के लोगों की तरह किरण को आमिर जानते थे। 2002 में आमिर और उनकी पहली पत्नी रीना का तलाक हुआ था। इसके बाद उनकी और किरण की बातचीत शुरू हुई। आमिर उस वक्त अपनी शादी टूटने से काफी सदमे में थे। एक बार किरण ने उन्हें फोन लगाया और दोनों के बीच करीब आधे घंटे तक बात चली थी। यह फोन कॉल खत्म हुई तब आमिर को महसूस हुआ कि वे काफी खुश हैं। किरण से बात करने के बाद उनको सुकून महसूस हो रहा था। यहां से दोनों के रिलेशनशिप ने सीरियस मोड़ लिया था। धीरे-धीरे बातचीत के बाद उन्होंने डेटिंग शुरू की और शादी से पहले करीब डेढ़ साल तक दोनों साथ रहे थे। साल 2005 में आमिर और किरण ने मुंबई में सिविल मैरिज की थी। शादी के बाद मुंबई के पंचगनी में 3 दिन का सेलिब्रेशन हुआ था और महेरबाई हाउस नाम के पुराने पारसी बंगले में उनकी शादी का रिसेप्शन हुआ था। जिसमें बॉलीवुड के कई बड़े स्टार्स दोनों को बधाई देने पहुंचे थे। किरण को मां बनने में दिक्कत हो रही थी,इसलिए उन्होंने सरोगेसी का फैसला लिया। इसके बाद उनके बेटे आजाद का जन्म हुआ। किरण ने कहा,'वो सच में हैरान रह गए थे। उनकी नजर में मैं बहुत संभावनाओं वाली लड़की थी जो जिंदगी में बहुत कुछ करना चाहती थी। उन्हें डर था कि कहीं आमिर जैसी बड़ी शख्सियत के आगे मैं खो न जाऊं, मेरी अपनी पहचान दब न जाए। 'आमिर की इतनी बड़ी शोहरत के बीच किरण को भी कई बार उस दबाव का एहसास हुआ, लेकिन उन्हें सुकून इस बात से था कि आमिर ने हमेशा उन्हें खुद जैसा रहने दिया। उन्होंने कहा था, 'आमिर ने कभी नहीं चाहा कि मैं किसी खास तरीके से रहूं। वो हमेशा खुश रहे कि मैं जैसी हूं, वैसी ही रहूं और यही उनकी सबसे बड़ी खूबी है। ' 2021 में 15 साल बाद दोनों ने आपसी सहमति से अलग होने का फैसला लिया।

डायरेक्शन में 13 साल बाद की वापसी

किरण राव ने साल 2023 में 13 साल बाद निर्देशन में वापसी की। डायरेक्टर के तौर पर उनकी दूसरी फिल्म 'लापता लेडीज' है। फिल्म की बात करें तो यह महिलाओं की पहचान,पितृसत्ता, सामाजिक व्यवस्था और आत्मसम्मान पर केंद्रित है। इस फिल्म की काफी तारीफ हुई। फिल्म ने 70वें फिल्मफेयर अवॉर्ड्स में रिकॉर्ड भी बनाया। 70वें फिल्मफेयर अवॉर्ड्स में इसे बेस्ट फिल्म का पुरस्कार मिला। वहीं, किरण राव को बेस्ट डायरेक्टर का सम्मान भी दिया गया। फिल्म 'लापता लेडीज' की एक्ट्रेस छाया कदम ने डायरेक्टर किरण राव के बारे में हाल ही में बातचीत में कहा कि किरण राव का सिनेमा उनके दिल से निकलता है। वो हर छोटे से छोटे डिटेल पर ध्यान देती हैं, ताकि फिल्म का कोई भी सीन गलत मैसेज न दे। छाया ने बताया कि कोरोना काल में शूटिंग के दौरान जब टीम के कई लोग बीमार पड़े, तो किरण ने खुद कैमरा और डायरेक्शन दोनों संभाले। एक पल के लिए भी उनके चेहरे पर शिकन नहीं आई। उन्होंने हम सबको हिम्मत दी। छाया ने आगे कहा कि किरण जी इंसानियत में यकीन रखती हैं। अगर कोई जूनियर आर्टिस्ट ठंड में खड़ा होता है, तो वो जाकर कहेंगी – 'भाई, स्वेटर पहन लो।'

'जटाधारा' रिलीज से पहले ही जबरदस्त चर्चा में

बॉलीवुड एक्ट्रेस सोनाक्षी सिन्हा और सुधीर बाबू अभिनीत मैग्नम ओपस 'जटाधारा' अपनी रिलीज से पहले ही जबरदस्त चर्चा में है। वेंकट कल्याण और अभिषेक जायसवाल के निर्देशन में बनी 'जटाधारा' की टीम ने इसकी प्रामाणिकता को बनाए रखने के लिए वास्तविक तांत्रिक अनुष्ठानों का आयोजन किया, जिससे दृश्यों में आध्यात्मिक ऊर्जा और वास्तविकता झलके। फिल्म की शूटिंग के दौरान हुए इन अनुष्ठानों में असली मंत्रों का जाप किया गया और प्रशिक्षित तांत्रिकों की देखरेख में पूरा माहौल तैयार किया गया। यह फिल्म न केवल एक अलौकिक ड्रामा है, बल्कि भारतीय संस्कृति, आस्था और रहस्यमय अनुष्ठानों से जुड़ी एक गहरी सिनेमाई यात्रा भी है। निर्देशक वेंकट कल्याण ने कहा,'हम केवल रहस्यमयी ऊर्जा को दिखाना नहीं,बल्कि उसे महसूस करना चाहते थे। 'जटाधारा' जैसी कहानी सिर्फ इफेक्ट्स से नहीं, बल्कि उस भावनात्मक गहराई से जुड़ती है जो मनुष्य को अदृश्य से संबंध जोड़ने की प्रेरणा देती है।' फिल्म की निर्माता प्रेरणा अरोड़ा ने बताया कि 'जटाधारा' केवल एक फिल्म नहीं,बल्कि आस्था और निडरता से जन्मा एक अनुभव है। उन्होंने कहा,'हम ऐसा संसार बनाना चाहते थे जो सच्चा और आत्मिक लगे। हर मंत्र, हर

भावना वास्तविकता से उपजी थी। सेट का माहौल इतना शक्तिशाली था कि ऐसा लगता था मानो सिनेमा और दिव्यता का संगम हो गया हो।'सह-निर्देशक अभिषेक जायसवाल ने भी कहा कि इस फिल्म में विजुअल इफेक्ट्स पर निर्भर रहने के बजाय प्रामाणिकता पर जोर दिया गया है। उन्होंने कहा, 'जो ध्वनि और कंपन प्राचीन अनुष्ठानों में होती है, वही दर्शकों तक पहुंचाना हमारा उद्देश्य था। सेट पर वे पल बेहद ऊर्जावान थे और यकीन है दर्शक भी उसकी तीव्रता को महसूस करेंगे।' 'जटाधारा' जी स्टूडियोज और प्रेरणा अरोड़ा द्वारा प्रस्तुत एक द्विभाषी सुपरनैचुरल फैंटेसी थ्रिलर है,जिसे उमेश कुमार बंसल,शिविन नारंग, अरुणा अग्रवाल,प्रेरणा अरोड़ा, शिल्पा सिंघल और निखिल नंदा ने मिलकर बनाया है।

दर्शकों को हंसी का तगड़ा डोज देने आ रही 'मस्ती 4'

मशहूर कॉमेडी फ्रेंचाइज 'मस्ती' फिर दर्शकों को हँसी का तगड़ा डोज देने आ रही है। बालीवुड फिल्म 'मस्ती 4' के साथ यह जोड़ी विवेक ओबेरॉय, आफताब शिवदासानी और रितेश देशमुख लंबे अंतराल के बाद दोबारा पर्दे पर साथ लौट रही है। फिल्म की घोषणा के दौरान विवेक ओबेरॉय ने कहा, 'जब इंद्र कुमार ने सालों पहले इस मस्ती की सवारी शुरू की थी, तब शायद किसी ने नहीं सोचा था कि मिलाप इसे एक नए लेवल तक ले जाएंगे। सच कहूं तो हमारी तिकड़ी की केमिस्ट्री कमाल की है। दर्शकों को कॉमेडी और कैओस से भरपूर 'मस्ती 4' में खूब मजा आने वाला है। मैं तो सबसे यही कहूंगा कि सिंगल टिकट में ट्रिपल मस्ती करनी है, तो रिलीज पर मिलते हैं। 'वहीं आफताब शिवदासानी ने भी अपने अनुभव साझा करते हुए कहा, 'मेरे लिए 'मस्ती' सिर्फ एक फिल्म नहीं, बल्कि दोस्ती, हंसी और परफेक्ट टाइमिंग का शानदार कॉम्बिनेशन है वो भी ऑनस्क्रीन और ऑफस्क्रीन दोनों ही। जो

कभी तीन दोस्तों की मौज-मस्ती के रूप में शुरू हुआ था, वह अब दर्शकों की भावनाओं से गहराई से जुड़ चुका है। 'मस्ती 4' के साथ लौटना उस जादू को फिर से जीने जैसा है, जिसने इस सफर की शुरुआत की थी। 'निर्माता शिखा करण अहलूवालिया ने बताया कि यह फिल्म पुराने दर्शकों के लिए नॉस्टैल्जिया का एहसास दिलाएगी और नए दर्शकों के लिए एक ताजा और भव्य अनुभव बनेगी। उन्होंने कहा, 'मस्ती फ्रैंचाइज भारतीय सिनेमा और दर्शकों के दिलों में एक खास जगह रखती है। 'मस्ती 4' के जरिए हमने उसी पुराने जादू को एक मॉडर्न और ग्रैंड विजन के साथ फिर से जीवंत करने की कोशिश की है। मिलाप का निर्देशन और तिकड़ी की कमाल की केमिस्ट्री इस फिल्म को और भी खास बनाती है।' निर्देशक मिलाप मिलन झवेरी ने कहा, 'पहली 'मस्ती' फिल्मों को लिखने से लेकर चौथी को डायरेक्ट करने तक का सफर बहुत शानदार रहा।

'मस्ती 4' में कॉमेडी,शरारत और एनर्जी पहले से कई गुना ज्यादा है। यह फिल्म हंसी का ऐसा तूफान लाएगी जिसकी झलक दर्शक ट्रेलर में देख चुके हैं। ' इस बार फिल्म में नए चेहरे भी मस्ती का रंग भरते नजर आएंगे। श्रेया शर्मा, रुही सिंह और एलनाज नौरोजी इस बार फ्रेंचाइज में अपनी नई चमक लेकर आई हैं। इनके साथ तुषार कपूर,शाद रंधावा और निशांत मलकानी जैसे कलाकार भी फिल्म में कॉमेडी का तड़का लगाने वाले हैं। फिल्म मस्ती के इस चौथे पार्ट का निर्देशन मिलाप मिलन झवेरी ने किया है, जबकि इसका निर्माण शिखा करण अहलूवालिया ने बड़े पैमाने पर किया है।

खेल समाचार

वेस्टइंडीज के खिलाफ वनडे सीरीज के लिए न्यूजीलैंड टीम घोषित

विलियमसन को आराम,हाल ही में टी-20 से संन्यास,मैट हेनरी की टीम में वापसी

नई दिल्ली,07 नवम्बर 2025। न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम ने वेस्टइंडीज के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज के लिए अपनी टीम का ऐलान कर दिया है। यह सीरीज 16 नवंबर से क्राइस्टचर्च में शुरू होगी। इस बार टीम के पूर्व कप्तान केन विलियमसन को आराम दिया गया है। तेज गेंदबाज मैट हेनरी की टीम में वापसी हुई है। वह इंग्लैंड के खिलाफ हाल ही में समाप्त हुई वनडे सीरीज के अंतिम दो मैच नहीं खेल सके थे, क्योंकि उन्हें पिंडली में खिंचाव की समस्या थी। अब वे पूरी तरह फिट होकर टीम में लौट आए हैं। विलियमसन ने हाल ही में टी-20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा की थी। वनडे सीरीज से विश्राम लेकर वे अगले महीने वेस्टइंडीज के खिलाफ होने वाली वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिपसीरीज की तैयारी पर ध्यान देना चाहते हैं।

मिचेल सेंटनर टीम की कप्तानी करेंगे : अनुभवी ऑलराउंडर मिचेल सेंटनर

को टीम की कप्तानी सौंपी गई है। वहीं, तेज गेंदबाज मैट हेनरी चोट से उबरकर टीम में वापसी कर रहे हैं। सेंटनर की कप्तानी में न्यूजीलैंड ने हाल ही में इंग्लैंड को 3 वनडे मैचों की सीरीज में 3-0 से हराया था।

कई खिलाड़ी अभी भी चोटिल : टीम के कई खिलाड़ी अभी भी चोट से जूझ रहे हैं, जिनमें मोहम्मद अब्बास , फिन एलन , लॉकी फर्ग्यूसन , एडम मिल्ने , विल ओ'रूर्क , ग्लेन फिलिप्स और बेन सीयर्स शामिल हैं। इनके अनुपस्थित रहने के बावजूद ब्लेयर टिकनर को टीम में बरकरार रखा गया है। इंग्लैंड के खिलाफ टिकनर ने शानदार प्रदर्शन किया था।

कोच रॉब वॉल्टर ने टिकनर की तारीफ की : कोच रॉब वॉल्टर ने टिकनर की मेहनत की सराहना करते हुए कहा,'हम उनसे इससे बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद नहीं कर सकते थे। उन्होंने अपनी गति और उछाल से इंग्लैंड के बल्लेबाजों को परेशान किया। यह उनके कड़े परिश्रम का नतीजा है।' उन्होंने आगे कहा,'यह देखकर खुशी होती है जब कोई खिलाड़ी मौका मिलने पर खुद को साबित करता है।

वेस्टइंडीज सीरीज के लिए न्यूजीलैंड टीम : मिचेल सेंटनर (कप्तान), माइकल ब्रेसवेल, मार्क चैपमैन, डेवॉन कॉनवे, जैकब डफी, जैक फॉक्स, मैट हेनरी, काइल जेमिसन, टॉम लैथम, डैरिल मिचेल, रचिन रवींद्र, नाथन स्मिथ, ब्लेयर टिकनर, विल यंग।

बांग्लादेश की पूर्व महिला क्रिकेट कप्तान ने चीफ सेलेक्टर पर ही लगाए यौन उत्पीड़न के गंभीर आरोप,जांच शुरू

नई दिल्ली,07 नवम्बर 2025। बांग्लादेश की महिला क्रिकेट टीम की पूर्व कप्तान जहांआरा आलम ने पूर्व चीफ सेलेक्टर और टीम मैनेजर मंजरुल इस्लाम पर यौन उत्पीड़न के गंभीर आरोप लगाए हैं। इसके बाद बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने इन आरोपों की जांच के लिए एक समिति गठित कर दिया है। इसके साथ ही बोर्ड ने समिति को 15 दिनों के भीतर अपने निष्कर्ष और सिफारिशें प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है। बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड की ओर से जारी बयान में कहा गया है, 'बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने बांग्लादेश की राष्ट्रीय महिला क्रिकेट टीम की एक पूर्व सदस्य की ओर से टीम से जुड़े कुछ व्यक्तियों द्वारा कथित कदाचार के संबंध में लगाए गए आरोपों पर चिंता व्यक्त की है। यह मामला संवेदनशील है, इसलिए बांग्लादेश क्रिकेट बोड ने आरोपों की जांच के लिए एक समिति गठित करने का फैसला लिया है। यह समिति 15 वर्किंग डे के भीतर अपने निष्कर्ष और सिफारिशें प्रस्तुत करेगी। ' बयान में कहा गया है, 'बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड अपने सभी खिलाड़ियों और कर्मचारियों के लिए एक सुरक्षित, सम्मानजनक और पेशेवर वातावरण सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है। बोर्ड ऐसे मामलों को बेहद गंभीरता से लेता है और जांच के निष्कर्षों के आधार पर उचित कार्रवाई करेगा। ' जहांआरा ने पत्रकार रियासाद अजीम को दिए एक इंटरव्यू में बताया है कि टीम मैनेजर मंजरुल इस्लाम ने उनके साथ अनुचित व्यवहार किया था। वह बगैर इजाजत उनके कंधे पर हाथ रखते और ऐसी निजी बातें करते, जिससे उन्हें असहज महसूस होता। पूर्व सेलेक्टर और मैनेजर हाथ मिलाने के बजाय गले लगाने के लिए उनके पास आते थे। यह उनकी टीम की साथियों और अन्य अधिकारियों की मौजूदगी के बावजूद होता था।

दूसरे एशेज टेस्ट में खेलूंगा पर चारों मैच खेलना संभव नहीं : कमिंस

नई दिल्ली,07 नवम्बर 2025। ऑस्ट्रेलिया के कप्तान पैट कमिंस ने कहा है कि वह इंग्लैंड के खिलाफ अगले माह होने वाले दूसरे एशेज टेस्ट में खेल सकते हैं पर उनके लिए सभी चार मैचों में खेलना संभव नहीं होगा। कमिंस के अनुसार मैचों के बीच काफी कम अंतर होने के कारण वह सभी मैचों में नहीं खेल सकते। कमिंस फिट नहीं होने के कारण 21 नवंबर से पर्थ में शुरू होने वाले पहले टेस्ट मैच से बाहर रहेंगे। ऐसे में उनकी अनुपस्थिति में टीम की कप्तानी अनुभवी बल्लेबाज स्टीव स्मिथ करेंगे। दूसरा टेस्ट मैच 4 दिसंबर से ब्रिस्बेन में खेला जाएगा और उससे पहले ही उनकी मैदान में वापसी पर फैसला होगा। कमिंस ने कहा, ''यही हमारा लक्ष्य है और हम दूसरे टेस्ट के लिए अपनी योजना बना रहे हैं। मैं अच्छी तरह से तैयार हो रहा हूं और पहले टेस्ट मैच के दौरान मुझे सही तरह से पता चल जाएगा कि मैं किस स्थिति में हूं।'' ऑस्ट्रेलियाई कप्तान के अनुसार वह अंत के सभी चार मैच में नहीं खेल पाएंगे। उन्होंने कहा, ''मैं जितना हो सके उतना अधिक खेलने के लिए उत्साहत हूं पर सभी में खेलना संभव नहीं है। अगर हमारे पास एक बड़ा मैच है और हम 40 या 50 ओवर गेंदबाजी करते हैं। इसके एकदम बाद ही दूसरे मैच में गेंदबाजी करना संभव नहीं है।''

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ किया 'वंदे मातरम्' का सामूहिक गायन

मातृभूमि की स्तुति में रचा गया 'वंदे मातरम्' स्वतंत्रता संग्राम के दौरान देशभक्ति की सबसे प्रबल प्रेरणा : मुख्यमंत्री साय

रायपुर,07 नवम्बर 2025। 'वंदे मातरम्' राष्ट्रगीत की 150 वीं वर्षगांठ के अवसर पर आज देशभर में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस ऐतिहासिक दिन को छत्तीसगढ़ में भी बड़े उत्साह और गर्व के साथ मनाया गया। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने मंत्रालय महानदी भवन में वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ सामूहिक रूप से 'वंदे मातरम्' का गायन किया। इस अवसर पर सभी ने 'वंदे मातरम्' के उद्घोष के साथ आज़ादी की राष्ट्रीय चेतना का पुण्य स्मरण किया और अमर बलिदानियों को नमन किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने संदेश में कहा कि वंदे मातरम् मां भारती की साधना और आराधना की प्रेरक अभिव्यक्ति है। उन्होंने कहा कि 'वंदे मातरम्' के सामूहिक गान का एक प्रवाह, एक लय और एक तारतम्य हृदय को स्पंदित कर देता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि 'वंदे मातरम्' का मूल भाव मां भारती है – यह भारत की शाश्वत संकल्पना, स्वतंत्र अस्तित्व-बोध और

सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है। प्रधानमंत्री ने कहा कि 'वंदे मातरम्' भारत की आज़ादी का उद्घोष था, जिसने गुलामी की बेड़ियों को तोड़ने और स्वाधीन भारत के स्वप्न को साकार करने की प्रेरणा दी। स्वतंत्रता आंदोलन में यह गीत क्रांतिकारियों की आवाज़ बना और यह केवल प्रतिरोध का स्वर नहीं, बल्कि आत्मबल जगाने वाला मंत्र बन गया। मोदी ने कहा कि 'वंदे मातरम्' में भारत की हजारों वर्षों पुरानी सभ्यता, संस्कृति और समृद्धि की कहानी समाहित है। विदेशी आक्रमणों और अंग्रेज़ों की शोषणकारी नीतियों के बीच 'वंदे मातरम्' ने समृद्ध भारत के स्वप्न का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि आज दुनिया भारत के नए स्वरूप का उदय देख रही है, जो अपनी परंपरा, आध्यात्मिकता और आधुनिकता के समन्वय से आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि 'वंदे मातरम्' आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना स्वतंत्रता संग्राम के समय था, और यह गीत सदैव हमारे हृदयों में अमर रहेगा। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने राष्ट्रगीत की 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर प्रदेशवासियों को शुभकामनाएँ दीं और कहा कि यह गीत मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम, कृतज्ञता और राष्ट्रधर्म की भावना का शाश्वत प्रतीक है। उन्होंने कहा कि आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पूरे देश ने एक स्वर में 'वंदे मातरम्' का सामूहिक गायन कर मातृभूमि की वंदना की है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम्' के वर्षभर चलने वाले स्मरणोत्सव का आज माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा राष्ट्रव्यापी शुभारंभ इस कालातीत रचना के 150 वर्ष पूरे होने का गौरवपूर्ण अध्याय है। इस अवसर पर वंदे मातरम् के सामूहिक गायन के साथ ही माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा स्मारक सिक्के का जारी होना एक ऐतिहासिक स्मृति है। बंकिमचंद्र चटर्जी द्वारा रचित वंदे मातरम् गीत भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की प्रेरणा रहा है, जिसने सदैव राष्ट्रीय गौरव, एकता और आत्मसम्मान की ज्योति प्रज्वलित की है। यह मातृभूमि की शक्ति, समृद्धि और दिव्यता का प्रतीक है, साथ ही भारत की एकता और आत्मगौरव की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि 7 नवम्बर 1875 को बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने इस कालजयी रचना की सृष्टि की थी, जिसे बाद में उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'आनंद मठ' में शामिल किया गया। मातृभूमि की स्तुति में रचा गया यह गीत स्वतंत्रता संग्राम के दौरान देशभक्ति की सबसे प्रबल प्रेरणा बना। अनेक क्रांतिकारियों ने 'वंदे मातरम्' कहते हुए हँसते-हँसते अपने प्राण न्योछावर कर दिए। वंदे मातरम भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का प्रतीक बन गया। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि 1905 में बंगाल विभाजन के समय 'वंदे मातरम्' ने स्वदेशी आंदोलन को नई ऊर्जा दी। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक यह गीत सांस्कृतिक एकता और राष्ट्रभक्ति का मंत्र बन गया। मुख्यमंत्री ने कहा कि 'वंदे मातरम्' सुनते ही हृदय में ऊर्जा, गर्व और देशभक्ति का संचार होता है। यह गीत हमें स्मरण कराता है कि हमारी भूमि, जल, अन्न और संस्कृति ही हमारी जीवनदायिनी शक्ति हैं। उन्होंने कहा,'यूरोप में भूमि को 'फादरलैंड' कहा जाता है, लेकिन भारत में हम अपनी भूमि को 'मातृभूमि' कहते हैं।' यह भाव रामायण के श्लोक 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' में प्रकट होता है। 'वंदे मातरम्' भी इसी भाव से जन्मा हमारा ध्येय-वाक्य है।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने 'वंदे मातरम्' की 150वीं वर्षगांठ पर छायाचित्र प्रदर्शनी का किया शुभारंभ

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने आज मंत्रालय महानदी भवन में 'वंदे मातरम्' की 150वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित छायाचित्र प्रदर्शनी का शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री साय ने प्रदर्शनी का विस्तार से अवलोकन करते हुए 'वंदे मातरम्' के सृजन से लेकर इसके राष्ट्रीय चेतना के प्रतीक बनने तक की ऐतिहासिक यात्रा का अवलोकन किया। उन्होंने प्रदर्शनी को अत्यंत महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि यह भारत के गौरवशाली इतिहास और स्वतंत्रता संग्राम के दौर की अनेक अनकही कहानियों को उजागर करती है। मुख्यमंत्री ने कहा कि ऐसी प्रदर्शनी नई पीढ़ी को देश की आजादी के मूल भाव और 'वंदे मातरम्' की प्रेरक भूमिका से परिचित कराती है। इस अवसर पर सांसद चिंतामणि महाराज, मुख्य सचिव विकास शील, मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव सुबोध कुमार सिंह, संस्कृति विभाग के सचिव रोहित यादव, मुख्यमंत्री के सचिव राहुल भगत, मुकेश बंसल, पी. दयानंद, डॉ. बसवराजू एस. सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

उदंती एरिया कमेटी के 7 नक्सलियों ने किया सरेंडर

गरियाबंद में 37 लाख के इनामी नक्सलियों ने डाले हथियार

गरियाबंद,07 नवम्बर 2025। गरियाबंद-धमतरी-नुआपाड़ा डिवीजन में उदंती एरिया कमेटी के 7 नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया है। इन पर कुल 37 लाख रुपए का इनाम घोषित था। आत्मसमर्पण करने वालों में उदंती एरिया कमांडर सुनील और सचिव एरिना शामिल हैं, जिन पर 8-8 लाख रुपए का इनाम था। इनके साथ कमेटी सदस्य लुद्रो, विद्या, नंदिनी और मलेश ने भी सरेंडर किया है। जिन पर 5-5 लाख रुपए का इनाम था। इसके अलावा 1 लाख रुपए की इनामी कांती ने भी आत्मसमर्पण किया है। नक्सलियों के पास से एक एसएलआर, तीन इंसास और एक सिंगल शॉट हथियार बरामद हुए हैं। सभी गरियाबंद पुलिस के सामने हथियार डाले हैं।

मीडिया के माध्यम से किया आत्मसमर्पण : जानकारी के मुताबिक, नक्सलियों ने आत्मसमर्पण के लिए मीडिया को

माध्यम बनाया। मीडिया मौके पर पहुंची और उनसे लगभग आधा घंटा चर्चा की। इस दौरान आत्मसमर्पण की इच्छा रखने वाले नक्सली लुद्रो की बात एसपी निखिल राखेचा से कराई गई। एसपी ने उन्हें सुरक्षित आत्मसमर्पण का भरोसा दिलाया, जिसके बाद उन्हें जंगल से मेन रोड तक लाया गया।

पुलिस की अपील के बाद संपर्क में आए बचे हुए नक्सली : शुरुआत में सुनील और एरिना किसी तरह पुलिस तक पहुंच गए थे, लेकिन लुद्रो, विद्या सहित पांच अन्य नक्सली सीधे संपर्क में नहीं थे। पुलिस की अपील उदंती के बचे हुए इन पांच नक्सलियों तक पहुंची। उन्होंने एसपी निखिल राखेचा की ओर से जारी नंबर पर भी संपर्क किया, लेकिन वे मीडिया की मध्यस्थता में ही आत्मसमर्पण करना चाहते थे।

रायगढ़ में कोल माइंस का विरोध: कहा- नहीं देंगे जमीन, रातभर धरने पर बैठे रहे 300 ग्रामीण,इनमें महिलाएं-बच्चे भी,जनसुनवाई रद्द करने की मांग

रायगढ़,07 नवम्बर 2025। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले के छाल क्षेत्र में कोल माइंस का विरोध हो रहा है। दरअसल,3 गांव पुरूंगा, साम्हरसिंघा और तेंदूमुड़ी के ग्रामीणों का कहना है कि वे अपनी जल,जंगल और जमीन कोयला खदान के लिए नहीं देना चाहते। 6 नवंबर को ग्रामीणों ने धरना प्रदर्शन किया। कोयला खदान के लिए 11 नवंबर को जनसुनवाई होगी। ग्रामीण इसे रद्द कराना चाहते हैं। 300 ग्रामीण कलेक्ट्रेट पहुंचे थे,लेकिन कलेक्टर ग्रामीणों से मिलने नहीं आए। इसके बाद ग्रामीण रातभर कलेक्ट्रेट के सामने बैठकर अपनी मांगों पर अड़े रहे। इस दौरान महिलाएं, बच्चे और लड़कियां भी धरने पर बैठी रहीं। पिछले 24 घंटे तक प्रदर्शन के बाद शुक्रवार दोपहर करीब 2 बजे तक आंदोलन कर रहे ग्रामीणों से मिलने कोई प्रशासनिक अधिकारी नहीं पहुंचे थे। ऐसे में प्रदर्शनकारियों को जानकारी मिली कि गांव में जनसुनवाई को लेकर जल्द तैयारी की जाने वाली है, तो ग्रामीण कलेक्ट्रेट के सामने अपना आंदोलन समाप्त कर वापस गांव चले गए। ग्रामीण अब गांव में जनसुनवाई का विरोध करने की बात कह रहे हैं।

3 गांव प्रभावित, 300 ग्रामीण धरने पर...

कोल माइंस से छाल क्षेत्र के ग्राम पंचायत पुरूंगा, साम्हरसिंघा और तेंदूमुड़ी का एरिया प्रभावित हो रहा है। 6 नवंबर की दोपहर में 3 ग्राम पंचायत के करीब 300 से ज्यादा ग्रामीण कलेक्ट्रेट पहुंचे। उनके समर्थन में धरमजयगढ़ से कांग्रेस विधायक लालजीत राठिया और खरसिया से विधायक उमेश पटेल भी आए थे। मांग देर शाम तक पूरी नहीं की गई। ग्रामीणों का कहना था कि जब तक मांग पूरी नहीं होगी, वे अपना धरना प्रदर्शन जारी रखेंगे और कलेक्ट्रेट के सामने ही दरी बिछाकर बैठ गए। ठंड बढ़ते गई, लेकिन वे नहीं उठे और रात भर अपनी मांगों को लेकर यहीं डटे रहे।

जनसुनवाई निरस्त करने की मांग

ग्रामीणों का कहना है कि ग्राम सभा में जनसुनवाई निरस्त होना चाहिए। इसका प्रस्ताव भी पारित किया गया। इसके बाद भी जब प्रशासन इसे गंभीरता से नहीं लिया तो ग्रामीणों ने अपना आंदोलन शुरू कर दिया। इस आंदोलन में तीनों गांव की बड़ी संख्या में महिलाएं-बच्चे और युवतियां भी शामिल हुई।

अब तक निरस्त करने का आदेश भेज देना था

धरमजयगढ़ विधायक लालजीत राठिया ने बताया कि यहां माताएं और छोटे-छोटे बच्चे बैठे हुए हैं। अभी तक जनसुनवाई निरस्त करने का आदेश रायपुर से भेज देना चाहिए। छत्तीसगढ़ की जनता जल, जंगल के मालिक हैं। सिर्फ एक ही बात को जानते हैं, छत्तीसगढ़ की हरियाली की सुरक्षा करना है। अभी तक विष्णुदेव साय की सरकार को जनसुनवाई निरस्त करने का आदेश भेज देना चाहिए।

बीजेपी नेत्री को मंच में आई गुस्सा, हाथ जोड़े बीजेपी नेता

जांजगीर-चांपा, 07 नवम्बर 2025। लौह पुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150 वीं जयंती पर यूनिटी मार्च का आयोजन किया जा रहा है. लेकिन इस यूनिटी मार्च में पूर्व सांसद और पूर्व जिला अध्यक्ष के बीच कुर्सी को लेकर विवाद हुआ, जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है. वायरल वीडियो में देखा जा सकता है कि जांजगीर-चांपा में कार्यक्रम के दौरान ही पूर्व सांसद कमला देवी पाटले और पूर्व बीजेपी जिला अध्यक्ष गुलाब सिंह चंदेल के साथ हुआ मंच पर ही बहस हो गई, इस वीडियो में पूर्व जिला अध्यक्ष हाथ जोड़ते नजर आ रहे है. पूर्व सांसद कमला देवी पाटले को इस वीडियो को देखकर ये कयास लगाया जा रहा है कि संभवतः कुर्सी उनके बेहद पास लगी हुई थी और वहां बैठने वाले व्यक्ति का हाथ लगा हो. लेकिन सोशल मीडिया में वीडियो वायरल होने के बाद अब यूजर्स ये सवाल कर रहे है कि ये कैसी यूनिटी मार्च है, जहां कुर्सी को लेकर ही भरे मंच में विवाद हो रहा है।

छत्तीसगढ़ सरकार और सतीश जग्गी को झटका

अमित जोगी की दोषमुक्ति बरकरार,सर्वोच्च न्यायालय ने सुनाया अपना फैसला..

रायपुर,07 नवम्बर 2025। जग्गी हत्याकांड मामले में छत्तीसगढ़ जनता कांग्रेस (जे) के नेता अमित जोगी को सर्वोच्च न्यायालय से बड़ी राहत मिली है। सुप्रीम कोर्ट ने अपने ऐतिहासिक फैसले में छत्तीसगढ़ राज्य सरकार और सतीश जग्गी द्वारा दायर सभी याचिकाएं खारिज कर दी है। अदालत के इस निर्णय से अमित जोगी की दोषमुक्ति बरकरार रहेगी। सर्वोच्च न्यायालय ने अपने आदेश में कहा कि, छत्तीसगढ़ राज्य द्वारा दायर दोषमुक्ति के विरुद्ध अपील खारिज की जाती है। सतीश जग्गी की ओर से दायर दोषमुक्ति के विरुद्ध अपील को पुनर्विचार याचिका में रूपांतरित करने का आवेदन भी खारिज किया गया। उच्च न्यायालय को निर्देश दिया गया कि वह सीबीआई के विलंब माफी आवेदन पर, अमित जोगी को सुनवाई का अवसर देने के बाद, तथ्यों और कानून के आधार पर विचार करे।

सर्वोच्च न्यायालय का तर्क : गुरुवार को दिए गए फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि जब जांच सीबीआई करे तो अपील का अधिकार राज्य सरकार के पास नहीं बल्कि केंद्र सरकार के पास होता है।

इसलिए छत्तीसगढ़ सरकार की अपील गैर-स्वीकार्य रही। सतीश जग्गी की याचिका भी इसलिए खारिज हुई क्योंकि बरी का आदेश 2007 का है, जबकि पीड़ित को अपील का अधिकार देने वाली धारा 372 साल 2009 में लागू हुई। हालांकि सीबीआई की देरी को कोर्ट ने माफ कर दिया और कहा कि इतने गंभीर मामले को केवल तकनीकी आधार पर खत्म नहीं किया जा सकता। इस आदेश के साथ ही सर्वोच्च न्यायालय ने उच्च न्यायालय के उस फैसले को बरकरार रखा है, जिसमें अमित जोगी की दोषमुक्ति को चुनौती देने वाली सभी 4 याचिकाएं (राज्य, सीबीआई और सतीश जग्गी) पहले ही खारिज की जा चुकी थीं।

अमित जोगी की प्रतिक्रिया

फैसले के बाद अपनी प्रतिक्रिया में अमित जोगी ने कहा, यह न्याय की एक ऐतिहासिक जीत है। सर्वोच्च न्यायालय के इस फैसले ने न केवल मेरी निर्दोषता पर एक और मुहर लगा दी है, बल्कि भारतीय न्याय प्रणाली पर मेरे अटूट विश्वास को भी मजबूत किया है। सत्य और न्याय की अंततः जीत होती है। मैं अपने परिवार, मित्रों और कानूनी टीम का आभारी हूं, जिन्होंने इस लंबी लड़ाई में मेरा साथ दिया।

क्या है पूरा मामला

जग्गी हत्याकांड मामले में अमित जोगी को सत्र अदालत ने वर्ष 2005 में ही पूर्ण रूप से दोषमुक्त कर दिया था। इसके बाद छत्तीसगढ़ राज्य और सीबीआई ने इस निर्णय को चुनौती देते हुए अपीलें दायर की थी, जबकि सतीश जग्गी ने एक पुनर्विचार याचिका और रूपांतरण आवेदन दायर किया था।

हाईकोर्ट का फैसला...1478 लेक्चरर बनेंगे प्राचार्य

फैसले के इंतजार में 126 व्याख्याता रिटायर हो गए शिक्षक संघ ने वित्तीय लाभ देने की मांग की...

बिलासपुर,07 नवम्बर 2025। छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के जस्टिस रविंद्र अग्रवाल ने प्राचार्य प्रमोशन के खिलाफ टीचर की याचिका को खारिज कर दी है। इस फैसले के बाद अब प्रदेश के 1478 व्याख्याताओं के प्राचार्य बनने का रास्ता साफ हो गया है। दरअसल, प्रमोशन से असंतुष्ट शिक्षकों ने हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी। इसके चलते प्रमोशन के बाद पोस्टिंग रोक दी गई थी। इस फैसले के इंतजार में 126 व्याख्याता बिना प्राचार्य पोस्टिंग के ही रिटायर हो गए। अब शिक्षक संघ ने रिटायर साथियों को भी वित्तीय लाभ देने की मांग की है। बता दें, कि राज्य शासन के ई-संवर्ग के व्याख्याताओं को प्राचार्य प्रमोशन देने की प्रक्रिया शुरू की थी। वरिष्ठता सूची का परीक्षण के बाद 30 अप्रैल को शासन के बनाए गए नियम के अनुसार 1478 प्राचार्य की पदोन्नति सूची जारी की गई।

लेकिन, प्राचार्य पदोन्नति फोरम के साथ ही शिक्षकों ने हाईकोर्ट में अलग-अलग याचिकाएं दायर कर पदोन्नति आदेश को चुनौती दी। इसमें बताया गया है कि,पहले कोर्ट के आदेश के बावजूद कई शिक्षकों को प्राचार्य पद पर प्रमोशन देकर ज्वाइन करा दिया गया है। इस पर कोर्ट ने सख्त रुख अपनाते हुए कहा था कि, यह न्यायालय की अवमानना का मामला है। आगामी आदेश तक की गई सभी ज्वाइनिंग को अमान्य कर दिया। फैसला आने के बाद एसोसिएशन ने 6 माह से रुके पोस्टिंग प्रक्रिया तत्काल शुरू करने की मांग की है।

बदलाव की डगर पर छत्तीसगढ़ की आबकारी नीति! फिर से ठेका पद्धति लागू होने की संभावना,मंथन जारी....

रायपुर,07 नवम्बर 2025। छत्तीसगढ़ में साय सरकार मौजूदा शराब नीति में बदलाव की कवायद कर रही है। प्रदेश में फिर से एक बार ठेका पद्धति लागू की जा सकती है। बताया जा रहा है कि आबकारी विभाग ने प्रारंभिक मसौदा तैयार कर लिया है। मसौदे पर अभी राज्य सरकार के स्तर पर चर्चा होनी है। नई शराब नीति पर सरकार के सहमत होने के बाद इसे कैबिनेट में प्रस्तुत किया जाएगा। दरअसल, आबकारी विभाग पिछले साल निर्धारित लक्ष्य को पूरा नहीं कर पाया। वर्ष 2024-25 में शराब से राजस्व का लक्ष्य ?11 हजार करोड़ था जबकि सरकार लक्ष्य से ?3 हजार करोड़ पीछे रही। जिसके बावजूद इस साल रेवेन्यू टार्गेट बढ़ा दिया गया है। इस

साल आबकारी विभाग ने शराब से 12,500 करोड़ कमाई का लक्ष्य तय किया है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए ही सरकार शराब नीति में बदलाव करने पर मंथन कर रही है। विभागीय अफसरों का कहना है कि विभाग 2026-27 के लिए नई शराब नीति को अधिक पारदर्शी और व्यावहारिक बनाने की कवायद कर रही है। इसके तहत पिछले महीने आबकारी सचिव सह आयुक्त आर संगीता के नेतृत्व में लाइसेंस धारकों और उद्योग प्रतिनिधियों के साथ बैठक हो चुकी है। डॉ. रमन सिंह की सरकार ने 2017 में शराब का सरकारी सिस्टम लागू किया था। भूपेश सरकार ने भी इसे जारी रखते हुए शराब से आबकारी शुल्क हटाया, ताकि अवैध बिक्री पर रोक लगे। इसके अलावा एप के जरिए मनपसंद शराब की होम डिलीवरी का सिस्टम भी शुरू किया गया। मौजूदा सरकार ने भी शराब की बिक्री के सरकारी सिस्टम को चालू रखा। इसके बावजूद राज्य में शराब बिक्री के लक्ष्य को पूरा नहीं किया जा सका इसलिए अब इसमें बदलाव करने की तैयारी है।

मेकाहारा अस्पताल में सनसनी : डस्टबिन के पास पॉलीथिन में मिला नवजात का शव,सीसीटीवी फुटेज में छुपा राज..!

रायपुर,07 नवम्बर 2025। छत्तीसगढ़ के सबसे बड़े सरकारी अस्पताल मेकाहारा से एक दिल दहला देने वाली वारदात सामने आई है। अस्पताल के इमरजेंसी गेट के पास पॉलीथिन में शुक्रवार सुबह एक नवजात का शव मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई। सुबह-सुबह लोगों ने जब पॉलीथिन के अंदर बच्चे का शव देखा तो तत्काल अस्पताल प्रबंधन को सूचना दी। मिली जानकारी के मुताबिक, शुक्रवार की सुबह एक सफाईकर्मी ने चीख मचाई तो वार्ड-बॉय दौड़े। इस दौरान इमरजेंसी गेट के पास डस्टबिन में में पॉलीथिन देखी, जिसमे एक

नवजात बच्चे की लाश थी। बच्चे की लाश मिलते ही हड़कंप मच गया। इसकी सूचना तत्काल अस्पताल प्रबंधन को दी गई। सूचना मिलते ही अस्पताल प्रबंधन जांच में जुट गई।

पुलिस को दी गई सूचना : सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंचकर जांच-पड़ताल में जुट गई। पुलिस ने शव को मरचुरी भेज दिया है और अस्पताल के सीसीटीवी फुटेज की जांच शुरू कर दी गई है। पुलिस अस्पताल के रिकार्ड खंगाल रही है और ये पता लगाने की कोशिश कर रही है कि बच्चे का जन्म अंबेडकर अस्पताल में ही हुआ था या उसे बाहर से यहां लाकर रखा गया है,हालांकि इस मामले में अंबेडकर अस्पताल प्रबंधन से कोई आधिकारिक जानकारी नहीं मिली है। प्रारंभिक जांच में आशंका जताई जा रही है कि किसी अज्ञात व्यक्ति ने नवजात को जन्म के तुरंत बाद पॉलीथिन में फेंक दिया।

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा सांई ऑफ्सेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050,डॉक रजिस्टर्ड क्र.:-13/सरगुजा/डीएन/2023-2025-मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)